इसके अमोघ फलप्रद योगो का अनुभव कर इसकी भाषा टीका की रचना से मै भी वैद्य महोदयों की सेवा के लिये उत्सुक हुआ।

इसमें प्रमादवश रही त्रुटियो के लिये विद्वानो से क्षमा प्रार्थी हूं इसके प्रचार व प्रकाश करने के लिये श्रीयुत मान्यवर वैद्यराज पंडित विश्वेश्वरदयालुजी का मैं अतीव कृतज्ञ हूं जिन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर अपने व्यय से छपवाकर विशेष धन्यवाद के भाजन हुए।

योगमाला के ५ नं० के नियमानुसार वैद्यराज महोदयजी की सेवा में समर्पित कर पं० जी को हृदय से धन्यवाद करता हूं और अन्त में परमात्मा से विनीत प्रार्थना है कि ऐसे परोपकारी नर रत्न दीर्घजीवी हो देश व विद्योन्नति में पूर्ण साफल्य साधन करे।

चन्द्र वसुमिते वर्षे ग्रह चन्द्र समन्विते।
ज्येष्ठमासेऽसिते पक्षे ग्रंथश्च पूर्णतां गतः॥
॥ ओ३म् शमिति॥

वैद्यवरो का कृपाकांक्षी—
विनीत,

वासुदेव शर्मा
ऊधमपुर जम्मू

हरिधारित ग्रन्थस्य विषयानुक्रमणिका।

विषय	पृष्ठ
ज्वराधिकार सुदर्शन चूर्ण	२
ज्वराङ्कुशोरसः	४
शीतज्वरांकुशरस	,,
ज्वरघ्नी गुटिका	५
अन्य ,,	,,
पित्तदाहज्वरे चूर्ण	६
कफ ज्वर में नस्य	,,
वातज्वर मे चूर्ण	,,
रस ज्वर मे ,,	७
वातपित्तज्वर में चूर्ण	,,
शीत ज्वर में ,,	,,
सन्निपात चिकित्सा	,,
आनन्द भैरव रस	,,
चिन्तामणि रस	८
कनकसुन्दररस	९
सन्निपातज्वर में क्वाथ	,,
,, चूर्ण	,,
अतीसार में वटी	१०
महागङ्गाधर चूर्ण	,,
लघु गङ्गाधर ,,	११
ज्वरातीसार में क्वाथ	,,
अन्य ,,	,,
रक्तातीसार में क्वाथ	१२
ग्रहणी चिकित्सा चूर्ण	,,
,, क्वाथ	,,
अर्श रोग वटी	१३
लवंग सेवन चूर्ण	,,
भगन्दर चिकित्सा	,,
,, लेप	१४
गुल्मरोग चूर्ण	,,
आमवात चिकित्सा लेप	,,
,, चूर्ण	,,

विषय	पृष्ठ
शूलरोग चूर्ण	१५
उदर रोग में औ० वटी	,,
,, चूर्ण	१६
पांडुरोग में औषधि	,,
हिक्कारोग मे चूर्ण	१८
छर्दिरोग में औषधि चूर्ण	,,
अन्य ,,	,,
श्वास रोग में ,,	,,
श्वासकास मे ,,	१९
कासघ्नी वटी	,,
,, वटी	,,
मन्दाग्नि मे चूर्ण	,,
अन्य ,,	२०
विशूचिका	,,
खल्ली	,,
शूल	,,
अण्डवृद्धि मे लेप	२१
प्रमेह रोग में चूर्ण	,,
अन्य चूर्ण	२२
मूत्र कृच्छ्ररोग में क्वाथ	,,
अन्य चूर्ण	,,
मूत्र रोध में लेप	,,
क्वाथ	,,
अश्मरी रोग में क्वाथ	२३
अपस्मार रोग में ,,	,,
,, नस्य	,,
ब्राह्मी घृत	२४
कुष्ट रोग मे चूर्ण	,,
,, क्वाथ	,,
,, लेप	,,
,, अन्य लेप	२५
,, लेप	,,

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
पामा में लेप	२५	सफेद बाल काले करने के लिये	३७
दद्रु विचर्चिका	२६	स्त्री रोग प्रतीकार प्रदर नाशक चूर्ण	,,
लूता विष में लेप	,,	अन्य चूर्ण	,,
सिध्मरोग में औषधि	,,	फूल आने की औषधि	३८
स्थावर विष में औषधि	२७	,, ,, वत्ती	,,
शस्त्र के घाव में औषधि	२७	योनि रोग में वत्ती	,,
वात व्याधि में चूर्ण	२८	विधि वत्ती की	,,
वातघ्नी वटी	,,	गर्भ धारण की औषधि	३९
वात पीडाहर क्वाथ	,,	अन्य चूर्ण	,,
लघु विषगर्भ तैल	२९	सुख प्रसूति	,,
त्रयोदशांग गुग्गलु	,,	,, लेप	,,
पित्तोद्रेक मेंऔषधि	३०	गिरते गर्भ का स्तम्भन	४०
पित्त दाह में लेप	,,	भग सङ्कोचन	,,
क्लेद रोग में औषधि	,,	,, वटी	,,
कफ कोप में चूर्ण	३१	भग दुर्गन्धहरण	४१
गण्डमाला में लेप	,,	कुच कठिन	,,
काञ्चनार गुग्गलु	,,	स्तन पीडाहर	,,
मुख रोग में औषधि	३२	वाजीकरण पुरुषीकरण	,,
दन्त रोग में औषधि	,,	स्तम्भन	४२
कील रोग में लेप	३३	वाजीकरण औषधि	,,
व्यङ्ग (झांई) में लेप	,,	काम विलास गुटी	,,
नासा रोग में	,,	देह दौर्गन्धहर	४३
पीनस में	३४	कक्षा दुर्गन्धहर	,,
नेत्र रोग में	,,	मुख दुर्गन्धहर	,,
,, पोटली	,,	उपदंशशूक प्रतीकार	,,
कर्ण रोग में	३५	उपदंश में कषाय	४५
शिर रोग में	,,	व्रण प्रक्षालन	,,
कफ में	,,	,, लेप	,,
पित्त में	,,	,, धूप	,,
त्रिदोष में	३६	शूकाधिकार	४६
अधाशीशी में	,,	शूक चिकित्सा	,,
,, नस्य	,,	विरेचनौषध	,,
केशवर्द्धन के लिये	,,	अपपाकशुद्धि	४७
इन्द्रलुप्त (बालचरा)	३७		

❀ श्री धन्वन्तरयेनमः ❀

हरिधारित ग्रन्थ रत्नम्



ग्रन्थ कृन्मङ्गलम्

वन्दे वन्दारुदेवं सुरनर वरदं विघ्नवल्ली कुठारम् ।
संसारागार भारोद्धरण पटुतर स्तम्भ मम्भोदनादम् ॥
उग्रचण्डा शुताम्रा चलशिखर सटक् कुम्भमम्भोजहस्तम् ।
भ्राम्यन्मत्तालिमालंत्रिभुवनविपदां वारणं वारणास्यम् ॥ १ ॥
गुरु वागीश्वरीञ्चैव नत्वा धन्वन्तरि मुनिम् ।
संक्षिप्यहारिशर्म्माहंर चयामिचिकित्सितम् ॥ २ ॥

टीकाकृन्मङ्गलम्

प्रणम्यसच्चिदानन्दं पार्वती सहितं शिवम् ।
हरिधारितग्रन्थस्य टीकाञ्चरचयाम्यहम् ॥ १ ॥
सुलभ्ययोगाः सर्वेऽस्मिन् रोगिणां सुखहेतवे ।
प्रकाश्यंते च वैद्यानां लाभायैवमयाधुना ॥ २ ॥
विधायटीकां विधिवत्सुगुप्तां विश्वेश्वराख्याय दयालुशर्मणे ।
श्रीवासुदेवेनद्विजेनशर्मणा समर्प्यते संप्रति सादरंमया ॥ ३ ॥

तत्रादौज्वर चिकित्सा

(अथ सुदर्शन चूर्णम्)

महौषधं कण्टकारी शटीश्रृङ्गी च पौष्करम् ।
कटुका मधु यष्टी च गडूच्या मलकानि च ॥ १ ॥
शालपर्णी निशाकृष्णा कारवीत्रायमाणका ।
पर्पटं धन्वयासश्च पत्रं खदिरसारकम् ॥ २ ॥
वंशजं बालकं मूर्वात्वड्मुस्तातिविषाभया ।
दीप्यकं ग्रन्थिकंवन्हि माषपर्णी पटोलकम् ॥ ३ ॥
सर्वौषध समोयोज्यो भूनिम्बश्चेति चूर्णितम् ।
सुदर्शनाख्यं विख्यातं पीतं तप्ताम्बुना सह ॥ ४ ॥
ज्वर मष्टविधं हन्ति सन्निपातं विशेषतः ।
दाहं मोहं तथा तंद्रां पाण्डु शूलञ्च कामलम् ॥ ५ ॥
हृद्रोगं श्वास कासादि रोगाणां नाशनं परम् ।

भाषा टीका—शुंठी, कटेरी, कचूर, श्रृंगी (काकड़ासिंगी) पोहकरमूल, कुटकी, मुलहठी, गिलोय, आमला, शालपर्णी, (सरवन) हल्दी, पिप्पली, सौंफ, त्रायमाणा (अभावे बनफ्सा) पापड़ा, धमासा, तजपत्र, खदिरसार, (कत्था) वंशलोचन, (तवासीर) सुगंधवाला, मूर्वा (अभावे विद्यापीठ निश्चत वनकेतकी मूलम् जंगली केवड़ा) दालचीनी, नागरमोथा, अतीस, हरड़, अजवायन, पीपलामूल, चीतामूल, वनमाष, बनपवेल, चिरायता यह सम्पूर्ण औषधि सम भाग लेकर बारीक चूर्ण तैयार करे सब औषधि के समान चिरायता मिलावे, इसे सुदर्शन चूर्ण कहते हैं सुखोष्ण जल से यह तीन माशा से ६ माशा मात्रा बलाबल के अनुसार सेवन किया हुआ आठ प्रकार के ज्वरों को शान्त करता है विशेष कर सन्निपात ज्वर में विशेष लाभकारी है, दाह, मोह, तन्द्रा, पाण्डु, शूल कामला हृदयरोग, श्वास (दमा) खांसी (कास) आदि अनेक रोगों का यथोचित अनुपानसे नाश करता है, अनु-

पान वैद्य महोदय अपनी बुद्धि के अनुसार परिवर्त्तन कर सकते हैं, यथा सन्निपात में आद्रक स्वरस, दशमूल, अष्टादशाङ्गादि कषायसे, कास मे कंटकारी कषाय से इत्यादि यह चूर्ण सचमुच सुदर्शन ही है इसकी अन्य ग्रन्थों मे भी बहुत प्रशंसा है यहां तक लिखा है कि सुदर्शन की उपमा देने से वास्तविक भगवान का सुदर्शन चक्र जैसे दुष्ट दानवों के नाश करने में अपनी अमोघ मारक शक्ति दिखाता है वैसा ही प्रभाव यह चूर्ण भी ज्वर मात्र में दिखाता है किन्तु शोक है कि स्वल्प मूल्य व अनायासलभ्य इस रत्न का आदर आजकल वैद्यवरों ने त्याग दिया है। यह एक योगराज ही ज्वर के सहानुजायी उपद्रवों को भी दमन कर देता है दूसरे उपचार की आवश्यकता नही रहती। एक २ बार इसकी परीक्षा तो कर देखें कि कुनीन का बाबा यह है कि नहीं। केवल उष्णोदक पर ही या चूर्ण ही खिलाने से महात्म्य नहीं है जैसे रोगी को सुखकर हो जैसे सुगमता से खा सके वैसा अपनी बुद्धि के अनुसार उपयोग कर लेना चाहिये। अगर इसी चूर्ण के अष्टावशेषित कषाय की चूर्ण को ४-५ भावना दे लो तो विशेष गुण दिखायगा, एक तो यह काष्टक औ-षधि होने से न्यूनाधिक सेवन में हानि नहीं दूसरा सुलभ्य अनायास सिद्ध कम खर्च बालानशीन की कहावत चरितार्थ करता है। किन्तु यह लघु सुदर्शन चूर्ण है वृहत् अन्य भाव प्रकाशादि ग्रंथों में विद्यमान है उसकी लग भग ५५ वनौषधियां हैं, उस ही का प्रयोग वैद्य महोदय कर देखें।

यतः, अधिकस्याधिकं फलम्—इसकी प्रशंसा में इस प्रकार लिखा अत्युक्त नही है।

सुदर्शनं यथा चक्रं दानवानां विनाशनम्।
तथा ज्वराणां सर्वेषां चूर्णमेतत्प्रनाशनम्॥

जब इसका प्रयोग वैद्यवर गण स्वयं अनुभव करेंगे तो इसका तारतम्य भी प्रतीत होगा मैंने इस पुस्तक में निर्दिष्ट प्रयोगो का अनेक बार अनुभवकर देखा है और प्रत्यक्ष फलप्रद पाये हैं, एतदर्थ इसे

प्रकट करना अवश्य समझा और भी इसके प्रयोगों का अनुभव कर देखले ।

॥ इति सुदर्शन चूर्णम् ॥

अथ ज्वरांकुशोरसः ।

त्रिकटु ह्यष्ट भागश्च द्वौभागौरसगन्धकौ ।
धत्तूर बीज विषजौ द्वौभागौ प्रकीर्तितौ ॥
संमर्द्यचाद्रकरसे गुंजा युग्म बटी कृता ॥
दत्ताद्रकरसेनैवनिहन्ति सकलाञ्ज्वरान् ॥

त्रिकटु (पीपल, मरिच, शुंठी) आठ भाग, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक दो २ भाग, धतूरे के बीज और शुद्ध विष दो २ भाग ।

विधि—प्रथम गन्धक का बारीक चूर्ण कर खरल से पारद सहित उक्त गन्धक चूर्ण को चार घंटा तक अच्छी तरह घोटे जब अत्यन्त कृष्ण कज्जली समान हो जाय तो खुरच कर अलग करले इसे कज्जली कहते हैं तदनन्तर अन्य औषधियो का बारीक कपड़ छन चूर्ण उक्त प्रस्तुत कज्जली से मिलाकर आद्रक के रस में घोटे दो २ रत्ती की गोली बनाले यह रस आद्रक के रस से सम्पूर्ण ज्वरो का नाश करता है ।

शीतज्वरांकुशोरसः ।

तालकं शुक्तिका भस्म टङ्कं टङ्कं प्रमाणतः ॥ ८ ॥
टङ्कयुग्मंतुत्थकञ्च कौमार्यास्त्रिभिर्भावितम् ।
शरावयुग्ममध्यस्थं पक्वं गजपुटे ततः ॥ ६ ॥
स्वांगशीतं समादाय गुञ्जायुग्मं सितायुतम् ।
भक्षयित्वाथ भुंजीत पथ्यंखण्डोदनं शुभम् ॥ १० ॥
शीतज्वरोऽचिरेणैव विनाशमधि गच्छति ।

हरताल, सीप की (मुक्ताशुक्ति) भस्म चार २ मासा, तूतिया ८ मासा शुद्ध इनको बारीक पीस घी कुमार के रस की तीन भावना देकर एक प्याला में इसकी टिकियां बनाकर धरे ऊपर दूसरा

प्याला रख सात कपरौटी कर सम्पुट धूप में सुखाकर गजपुट जङ्गली कण्डों से दे जब सर्वाङ्ग शीतल होजाय तो सम्पुट युक्ति से खोलकर औषधि निकाल बारीक पीसकर शीशी में भर रक्खे इस रस की दो रत्ती मात्रा मिश्री के साथ सेवन करने से शीतज्वर का नाश होता है, इस रस के सेवन करने वाले रोगी को पथ्य में पुराने उत्तम चावलों का भात शर्करा (चीनी) के साथ देना चाहिये तो इससे शीघ्र ही शीतज्वर दूर होता है।

ज्वरघ्नी गुटिका।

उपकुल्याऽरिष्टफलेयतः श्वतशिलासमम् ॥ ११ ॥
कारवल्लीरसे पिष्ट्वावटीं टङ्क प्रमाणतः।
कृत्वा प्रदापयेद्वैद्यस्त्रिदोष ज्वरनाशिनीम् ॥ १२ ॥

पीपल, निमौली, मनःशिला-यह सम भाग लेकर बारीक चूर्ण कर करेला के रस से खरल कर ४ माशा की गोली बनाले यह बटी त्रिदोष ज्वर का नाश करती है।

"वैद्यवरों के हितार्थ इसी का पाठान्तर लिखता हूँ जिसका अनेकवार प्रयोग किया जा चुका है, इसका हरेक ज्वर में प्रयोग किया जाता है" यह इसका मूल पाठ नहीं है, यथा—

प्रक्षिप्त।

श्यामामनः शिलरिष्टफलं सम्यग्विचूर्णयेत्।
कारवेल्लीरसेनैव गुटिकां कारयेद्बुधः ॥ १ ॥
अस्यानेत्राञ्जनात्सर्वे ज्वरा नश्यन्तिदारुणाः।
ज्वरघ्नी गुटिकानाम नेत्र रोगापहारिणी ॥ २ ॥

श्यामा नाम पिप्पली का है यथा (कटुबीजा श्यामा दन्त कफेति) पिप्पली, मनःशिला, निमौली (नीव का फल) सम भाग इसका चूर्ण कर करेला के रस से गोली तैयार करे पानी से घिस कर इसे नेत्रों में आंजने से ज्वरमात्र की शान्ति होती है, ज्वर के

वेग से प्रथम दो तीन बार इसका अञ्जन पानी या गुलाब के अर्क से करना चाहिये विशेष लाभ होता है. खाने की औषधि भी खिलानी इसका प्रयोग भी करना चाहिये (एकन्तरा ज्वर, चातुर्थिक ज्वर मे भी इसका विशेष फल देखा गया है, पर वैद्यवरों ने इसे आज तक गुप्त ही रखा था मुझे यह प्रयोग श्री १०८ श्रीयुक पूज्यपाद् पण्डिता नाम अगण्य श्रीवत्स्य कुलावतंस स्वर्गभूषण वैद्यराज पं. श्रीनन्द लाल शर्मा महोदयजी ऊधमपुर-जम्बू, कश्मीर स्टेट से प्राप्त हुआ था वह मेरे मातुल थे प्रेम से मुझे चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा दी थी अनेक वर्षों के अनुभव से सिद्ध उनके अमोघ गुणकारी प्रयोग फिर कभी वैद्यवरों की सेवा में प्रकाशित करने की आशा है।

पित्तदाह ज्वरे चूर्णम्

ह्री वेरं वंशजं मुस्त शुंठीं चन्दन पर्पटम्।
उशीरं चेति नीरेण चूर्णं पित्त ज्वरं हरेत्॥ १३॥

नेत्रवाला, तवाशीर, नागरमोथा, शुंठी, सफेद चन्दन, पापड़ा, खस समभाग ले इनका बारीक चूर्ण कर शीतल जल से सेवन करे दाह युक्त पित्त ज्वर को शान्त करता है।

कफज्वरे नस्यम्

कटफलञ्च त्रिकटुकं पिष्ट्वा नीरेण भावितम्।
कफोत्थितं ज्वरं हन्ति क्षणेनैव न संशयः॥ १४॥

कायफल वृक्ष की छाल, पिप्पली, मरिच, शुंठी जल से पीसकर कफोत्थित ज्वराक्रान्त रोगी को सुंघाने से कफ ज्वर शान्त निश्चय से होता है।

वातज्वरे चूर्णम्

त्रिकटुन्मभयाचाथ सौवर्चल किराततकम्।
चूर्णमेतज्ज्वरंवातसंजातं हन्तिभक्षणात्॥ १५॥

पिप्पली, मरिच, शुंठी, हरड़, सांचर नमक, चिरायता इनका

सम भाग बरीक चूर्ण करे इसके सेवन से वातज्वर शान्त होता है ॥ १५ ॥

अथ रसज्वरे चूर्णम् ।

अजमोदाभयायुक्त सौवर्चल समन्वितम् ।
तप्तोदके न संपीतं रसशेषज्वरापहम् ॥

अजवाइन, हरीतकी, सोंचर नमक समान भाग इनका चूर्ण कर सुखोष्ण जल से सेवन किया रस ज्वर का नाश करता है ॥ १६ ॥

अथ कफ वात पित्त ज्वराणां चूर्णम् ।

भूनिम्ब विश्वौषधमुस्तपर्पटं कृष्णा गुडूची कटुका समांशतः ।
चूर्णं जलेनोत पिबेन्नरो यस्तस्याशु नश्यन्ति त्रिदोषजा ज्वराः ॥ १७ ॥

चिरायता, शुंठी, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, पीपल, गिलोय, कुटकी सम भाग इनको लेकर बारीक चूर्ण करे (यदि चिरायता के चूर्ण को भावना दी जायें तो विशेष लाभ होगा) यह जल से सेवन किया शीघ्र ही वात, पित्त, कफजनित ज्वरों को दूर करता है ॥ १७ ॥

शीतज्वरे चूर्णम् ।

छिन्नोद्भवोपकुल्या च शुण्ठी गोपी समांशतः ।
जलेन टंकद्वितयं पीतं शीतज्वरापहम् ॥ १८ ॥

गिलोय, पिप्पली, सोंठ, सनाय की पत्ती (अथवा काली वेल) इनका बरीक चूर्ण कर ८ माशा की मात्रा जल से सेवन किया शीतज्वर का नाश करता है ।

अथ सन्निपात चिकित्सा ।

(आनन्द भैरवोरसः)

हिंगुल टंकणं चैवविषं मरिचपिप्पली ।
शृङ्गवेर रसेनैपावटी गुंजाप्रमाणता ॥ १९ ॥
आनन्दभैरवरसः सन्निपात ज्वरं कफम् ।
शीताङ्गानिलसंमोहं शूलानि प्रसभंजयेत् ॥ २० ॥

शुद्ध शिगरफ, शुद्ध सुहागा, शुद्ध विष, मरिच, पिप्पली इनको सम भाग ले प्रथम हिंगुल प्रभृतियों का बारीक चूर्ण पृथक् २ करें विष और सुहागा इकट्ठा अच्छी तरह घोंटे बाद पिप्पली मिलाकर घोटे बाद अन्य औषधियां मिलाकर आद्रक के रस से खरल कर एक एक रत्ती की गोली बनावे इसे आनन्द भैरव कहते हैं।

यह सन्निपात ज्वर, कफ, शीताङ्ग, वायु, मोह, शूलादि रोगों का हठ से विनाश करता है ॥ २० ॥

अथ चिन्तामणि रसः

पारदं गन्धकं श्रीणकटून पटु ❀ पञ्चकम् ।
+ क्षारत्रय जीरके द्वे गगनं विष मित्यतः ॥ २१ ॥
संपेष्यार्द्रकताम्बूलरसाभ्यां पञ्चरक्तिका ।
वटी चिन्तामणिर्नामरसा हन्ति त्रिदोषजम् ॥ २२ ॥
ज्वरन्तथा च विषममामवातं कफन्तथा ।
अर्शोविनाशयत्याशु शूला ध्मानोदराणि च ॥ २३ ॥

हिंगुलोत्थ पारद, शुद्ध गंधक, पिप्पली, मरिच, शुंठी, पांचों लवण, यवक्षार सज्जीक्षार, शुद्ध सुहागा, काला और सफेद जीरा, कृष्णाभ्रक भस्म, शुद्ध विष यह १७ औषधि बारीक पृथक्-पृथक् पीस लो पारद गंधक की कज्जली कर पुनः अन्य औषधि मिलाकर आद्रक रस और पान के रस मे एक-एक दिन घोटकर पांच रत्ती की गोली बनावे यह चिन्तामणि रस सन्निपात ज्वर, विषम ज्वर, आमवात, कफ, बवासीर, शूल, आध्मान, उदर रोगों का शीघ्र नाश करता है ॥ २३ ॥

❀ सिन्धु सौवर्चल चैव विडं सामुद्रकं गडं ।
एक द्वि त्रि चतुः पञ्च लवणानि क्रमाद्विदुः ॥ १ ॥
+ सर्जिका यावशूकञ्च क्षार द्वय मुदाहृतम् ।
टंकणेन युतन्तञ्च क्षारत्रय मुदीरितम् ॥ २ ॥

कनकसुन्दरो रसः ।

+त्र्यूषणं गन्धकं सूतं विषं टंक मितंपृथक् ।
कनकस्यजटाटङ्कत्रयं चैकत्र मर्दयेत् ॥ २४ ॥
त्रिदिनं मार्कवरसे गुटिका गुञ्ज मानतः ।
सन्निपातञ्च शीतागं कफं शीतज्वरारुची ॥ २५ ॥
उन्मादञ्चभ्रमं हन्ति रसः कनकसुन्दरः ।

पिप्पली, मरिच, शुण्ठी, गंधक, पारा, शुद्ध विष प्रत्येक चार २ मासा और धतूरा की जटा (मूल) १२ मासा, प्रथम पारा, गंधक की कज्जली करलो बाद अन्य औषधि मिलाकर भांगरा के रस में तीन दिन मर्दन कर एक रत्ती की गोली करे यह रस सन्निपात, शीतांग, कफ, शीतांग, कफ, शीतज्वर, अरुचि, उन्माद, भ्रमादिकों का नाश करता है ॥ २५ ॥

सन्निपातेक्वाथः ।

किरातं ग्रंथिकंशुंठी त्वेषां क्वाथः प्रदापयेत् ।
सन्निपातज्वरोघोरः शान्तिमेति न संशयः ॥ २६ ॥

चिरायता, पिप्पली मूल, शुंठी, कषाय विधि से अष्टमांश साधित इनका क्वाथ देने से घोर सन्निपात ज्वर नष्ट होता है ॥ २६ ॥

चूर्णम् ।

किराता कर्कटंदेवकुसुमं कुंकुमं कणा ।
शृङ्गवेर रसेनैषां चूर्णं शाणमितं पिबेत ॥ २७ ॥
सन्निपातं कफोन्मादौ÷तन्द्रा मारुत शीतताम् ।
कासं शूलं भ्रमं मोहं ज्वरं चापि विनाशयेत् ॥ २८ ॥

+ पिप्पली मरिचं शुंठी त्रिभिस्त्र्यूषण मुच्यते ।
÷हृदये व्याकुलीभावं क्लेदोवादेह गौरवम् ।
मनोबुद्ध्यप्रसादञ्च तन्द्राया लक्षणं विदुः ॥

चिरायता, अककरा, लौंग, केशर, पिप्पली समान भाग लेकर, इनका चूर्ण कर ४ मासा मात्रा परिमाण से आद्रकके रससे सेवन किया सन्निपात, कफ उन्माद, तन्द्रा, वायु, शीतांग, कास, शूल भ्रम, मोह का नाश करता है ॥ २८ ॥

—०—०—

अथातीसार चिकित्सा ।

मरिचन्दाडिम :ली मस्तकी वंशरोचनम् ॥ २९ ॥
चूतास्थि मज्जालोध्रश्च महाराष्ट्री च मालिका ।
माजूफलं मोचरसस्तथा खदिर सारकम् ॥ ३० ॥
कूष्मांडबीजमज्जा च तथा जातीफलं शुभम् ।
बब्बूलपुष्पं चैतानि ह्यहिमूलाम्बुनासह ॥ ३१ ॥
सम्पेष्यशाणप्रमितावटी तण्डुल वारिणा ।
पीतानिहन्त्यतीसारं पथ्यं संमथितोदनम् ॥ ३२ ॥

मरिच, अनार के फूल, रूमीमस्तगी, तवासीर, आम की गुठली की गिरी, लोध, शुद्ध फिटकरी, मांई, माजूफल, मोचरस, कत्था, पेठा के मगज, जायफल, बबूल के फूल यह समभाग लेकर बारीक चूर्ण कर पोस्त के जल मे खरल कर चार मासा की गोली करे यह गोली चावलों के धोवन से सेवन की अतीसार का नाश करती है, इसमें पथ्य मथित गाय के दही से भात देना चाहिये, रोगी की हालत देखकर ॥३२

अथ महागङ्गाधरचूर्णम् ।

मुस्तारलु प्रतिविषाधातकी विश्व भेषजम् ।
× लज्जालुर्लोध्रंचूतास्थिमज्जा मोचरसस्तथा ॥ ३३ ॥

× लज्जालुर्हिंशमीपत्रा समङ्गाजलकारिका ।
रक्तपादि नमस्कारी नाम्नाखदिर वेत्यपि ॥ निघण्टौ गुणाश्च ॥
लज्जालुःशीतलातिक्ता कषाया कफ पित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसारं योनि रोगांश्च नाशयेत् ॥

कौटजं खादिर:सारो वंशरोचन बालकम् ।
मधुकञ्चेति सचूर्ण्यं पिवेत्तण्डुल वारिणा ॥ ३४ ॥
अतीसार विनाशः स्यात्पथ्यं संमथितोदनम् ।

नागरमोंथा, अरलु, (टाटर) अतीस, धवई के फूल, शुंठी, लज्जावन्ती (छुईमुई) लोध, आम की गुठली, मोचरस, इन्द्रयव, कत्था दबासीर, नेत्रवाला, मुलहठी इनका चूर्ण चावलों के धोवन से सेवन किया अतिसार का नाश करता है। पथ्य-इसमे भी गाय के दही का पनीर बनाकर तोड़ निकाल दे बाद अन्य जल मिलाकर घोल करे इसमें काली मिरच, सेंधा नमक, जीरा, शुंठी मिलाकर तैयार करे, इसके संग भात खिलाना चाहिये।

लघु गंगाधर चूर्णम्

विश्वौषधं मोचरस मजमोदा च धातकीम् ॥ ३५ ॥
संचूर्ण्यतक्रं संपीतमतीसारं विनाशयेत् ।

शुंठी, मोचरस, अजमोदा, (वल्ल अजवायन) धवई के फूल सम भाग लेकर इनका चूर्ण करे यह तक्र (मठा) से सेवन किया अतिसार का नाश करता है ॥३५॥

अथ ज्वरातीसारे क्वाथः

शुंठी गुडूची मुस्तातिविषाखादिर सारकम् ॥ ३६ ॥
इति पञ्चौषधिः क्वाथो ज्वरातीसार नाशनः ॥

तथाच—

नागरातिविषा मुस्ता भूनिम्बामृत वत्सकैः ॥ ३७ ॥
सर्वं ज्वरहरः क्वाथः सर्वातिसार नाशनः । इति ग्रन्थान्तरे

शुंठी, गिलोय, नागरमोंथा, अतीस, कत्था इन पांच औषधियों का क्वाथ ज्वरातीसार नाश करता है ॥ ३६ ॥

ग्रन्थान्तरसे (नागरादिक्वाथ) शुंठी, अतीस, नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, कूड़ा की छाल, ज्वर सहित अतिसार और केवल अतिसार का (सर्वज्वर, सर्व अतिसार का) नाश करता है ॥३७॥

रक्तातिसारे क्वाथः

वंशजं बालकंमुस्तं खादिरः सारएव च ।

बिल्वं प्रतिविष'क्वाथो ज्वररक्तातिसारजित् ॥ ३८ ॥

तवासीर, नेत्रवाला, नागरमोथा, कत्था, छोटे कच्चे बिल्वकी गिरी, अतीस इनका क्वाथ ज्वर सहित रक्तातिसार का नाश करता है, तवासीर का चूर्ण पीछे से मिलाना चाहिये ॥ ३८ ॥

अथ ग्रहणी चिकित्सा

मुस्ताशुंठी कुण्डलीचातिविषाचोष्णवारिणा ।

चूर्णमामारुचि हरंग्रहणी वायुशूलजित् ॥ ३९ ॥

नागरमोंथा, शुंठी, बालछड़, अतीस, सम भाग लेकर इनका चूर्ण कर सुखोष्ण जल से सेवन किया आम, अरुचि, संग्रहणी वायुशूल को जीतता है ॥ ३९ ॥

अथ क्वाथः

लोध्रं पाठा च लज्जालुमुस्तं बिल्वं महौषधम् ।

धन्य कातिविषेबालं वराखदिरसारकः ॥ ४० ॥

क्वाथएषामामशूलग्रहण्यरुचि नाशकः ।

लोध, पाठा, छुईमुई, नागरमोंथा, बेलगिरी, शुंठी, धनियां, अतीस नेत्रवाला, शतावरी, कत्था का अष्टमांश, चतुर्थांश वा अवशिष्ट इन औषधियों का क्वाथ आम, शूल, ग्रहणी, अरुचि का नाश करता है ॥ ४० ॥

श्रीहरिरायशर्मं विरचिते हरिधारितग्रन्थे ज्वरसन्निपातातीसार ग्रहणीरोग प्रतीकारोनाम प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥

अर्शोरोगाधिकार ।

मरिचान् द्विगुणाशुंठा चित्रमष्टगुणं तथा ॥ ४१ ॥
सूरणः षोडशगुणः सर्वेभ्यो द्विगुणोगुडः ।
एषा टंकद्वयवटी दुर्नामानाह गुल्मजित् ॥ ४२ ॥

मरिच १ भाग, शुंठी २ भाग, चीता ८ भाग, सूरणकंद (पंजाब प्रांत मे इसे जिमीकंद कहा जाता है) १६ भाग, सब औषधों से द्विगुण पुराना गुड़, प्रथम सब औषधों का बारीक चूर्ण करे, बाद गुड़ मिलाकर इमामदस्ता में धर कर खूब चोटें लगावे, जब औषधि अच्छी तरह मिल जाय तो २ टंक (८ मासा) के मोदक तैयार करे, यह गोली अर्श (बवासीर) आनाह (पेट का फूल जाना) और गोला का नाश करता है ॥ ४२ ॥

अथ चूर्णम् ।

स्योनाकश्चित्रकः शुंठी कौटजं सैन्धवंविडम् ।
चूर्णं तक्रेण संपीतं दुर्नाम्नां नाशनं परम् ॥ ४३ ॥

टाटर, चीते की छाल (यहा रक्तचित्रक लेना उत्तम है) सोंठ, इन्द्रयव, सेंधानमक, विडङ्ग इनका चूर्ण गाय के मठा से सेवन किया अर्श का नाश करता है ॥ ४३ ॥

लवङ्गं घृतसंपीतं रक्तार्शो नाशनं परम् ।

लौंग का चूर्ण गौ घृत से भक्षण किया रक्तार्श (खूनी बवासीर) का नाश करता है ।

—०—०—

अथ भगंदर की चिकित्सा ।

दन्ती निशामलक कल्कितलेपनेन ।
प्रातर्भगन्दर दरोर्विान वृत्तिमेति ॥
शुंठी वटच्छद वरासुर दारुजाती ।
पत्राणि सैन्धव युतान्यथवा प्रलेपात् ॥ ४४ ॥

दन्ती, हल्दी, आमला इनका कल्क कर प्रातः भगन्दर के ऊपर लेप करने से भगन्दर का नाश होता है। अथवा- शुंठी, वटके पत्ते शतावरी, देवदारु, जावित्री, सेंधा नमक इनका लेप करने से भगन्दर का नाश होता है।

अथ गुल्मौषधम्

सौवर्चलं सैन्धवञ्च रामठं विश्व भेषजम्।
शटङ्गवेरं विडंकृष्णाजमोदायाव शूकजः॥ ४५॥
हरीतकी विडगानि समभागानि कारयेत्।
एषा चूर्णं घृतेनाद्याद् गुल्माजीर्णाशसांचयः॥ ४६॥

सोचर नमक, सेधानमक, घी में भुनी हींग, सोंठ, आद्रक, विट्लवण, पिप्पली, अजमोदा ❀ (वल्ल अजवायन) यवक्षार, हरड़, विडङ्ग सम भाग ले सब वस्तु पीसकर चूर्ण करे, यह चूर्ण गौ घृत से सेवन किया गुल्म, अजीर्ण और अर्श का नाश करता है॥ ४६॥

अथामवात चिकित्सा।

शिग्रुसर्षप शुंठीभ्यो द्विगुणो देवदारुकः।
आर नालेन संलिप्य नाशये दाम शोथताम्॥ ४७॥
कृष्णापाठा कंटकारी शुंठ्याजाजी हरीतकी।
ग्रन्थिकं चित्रकं मुस्तं गजकृष्णा समांशतः॥ ४८॥
चूर्ण मुष्णाम्बुना पीतमामवातार्ति नाशनम्।
मन्दाग्नि शूल लीहानां कासं श्वासञ्च नाशयेत्॥ ४९॥

सिहांजना के बीज, सरसो, सोंठ एक २ भाग, देवदारु दो भाग इनको कांजी मे पीसकर आमवात की सूजन पर लेप करने से आराम होता है तथा पिप्पली, पाढ, कटेरी, शुंठी, कालाजीरा,

---

❀अन्तः संमार्जने प्रोक्ताजमोदा च यवानिका।
वहिः सम्मार्जनेप्रोक्ताजमोदा चा जमोदिका॥

हरड़, पीपलामूल, चीता, नागरमोथा, गजपीपल सम भाग ले चूर्ण कर गरम जल से सेवन करने से आमवात की पीड़ा दूर होती है और मन्दाग्नि, शूल, सीहा, (तिल्ली) कास (खांसी) श्वास (दमा) का भी नाश करता है।

अथ शूलौषधम्।

×तुम्बरुण्यभया हिंगुक्षारञ्च लवण त्रयम्।
यवानी पौष्करं मूल विडंगं सम भागतः॥ ५०॥
त्रिवृदत्र त्रिगुणिता चूर्ण टङ्कत्रयंपिबेत्।
तप्ताम्बुना शूल गुल्म कफाध्मानाम वातनुत्॥ ५१॥

तुंवरू (तेजवल के बीज) हरड़, घी में भुनी हींग, यवक्षार, तीनों लवण (सेंधा, सोचर, विड नमक) अजवायन, पोहकरमूल, विडङ्ग यह सब औषधें सम भाग, निसोत तीन भाग इनका चूर्ण तीन टङ्क (१२ मासा) की मात्रा से गरम जल के साथ सेवन करने से शूल, गुल्म (गोला) कफ, आध्मान और आमवात (गठिया) का नाश होता है। १२ मासा ही की मात्रा पर निभर नहीं रहना चाहिये देश काल अवस्था बलाबल के अनुसार न्यूनाधिक कर लेना चाहिये॥ ५०-५१॥

अथोदर रोगौषधम्

—०—०—

क्षारत्रयं पञ्चपटूनि कृष्णा तथानिशेद्वे विनियोजनीया।
मुस्तवरोथा यवक्षार कञ्चतीक्ष्णञ्च कौमारिकता विभाव्यः॥ ५२॥
यामद्वयाग्नौ परिपक्वमे तत्सर्वोदराणां प्रशमं करोति।
वटीकृता शाणमिता प्रदत्ता मन्दाग्नि शूलादि विनाशिनी च॥ ५३॥

×तुम्बरु सौरभः सारो वनजः सानु जोनिजः।
तीक्ष्णवल्कस्तीक्ष्ण फलस्तीक्ष्ण पर्णी महामुनिः॥ इति धन्वन्तरिः॥

सज्जीक्षार, यवक्षार, शुद्ध सुहागा, पांचो लवण (सेंधा, सांभर, सोंचर, विड, समुद्र नमक) पिप्पली, हल्दी, दारुहल्दी, मुसब्बर (एलुआ) यवक्षार (दो बार यवक्षार कहा है अतः अन्य औषधियों से द्विगुण लेना) × मरिच सम भाग इनको बारीक चूर्ण कर घी गुवार के रस मे दो पहर कढाई मे धरकर अग्नि पर पका कर ४ मासा की गोली करे यह गोली सम्पूर्ण उदररोग, मन्दाग्नि और शूलादिकों का विनाश करती है। एक मासा की गोली से भी उपरोक्त लाभ हो जाता है ॥ ५२-५३ ॥

तथाच—

स्वर्जिकं मरिच शुंठी कृष्णाचेति चतुष्टयम् ।
तप्तोदकेन संपीतं शूल रोग हरं परम् ॥ ५४ ॥

सज्जीक्षार, मरिच, शुण्ठी, पिप्पली इन चार औषधो का चूर्ण उष्ण जल से सेवन किया उदर सम्बन्धी शूलो के नाश करने में अत्युत्तम है ॥ ५४ ॥

अथ पाण्डुरोगौषधम् ।

किरातवासा निम्बाश्च त्रिफला कटुकामृता ।
कषायमेषां मधुनापीत्वा पाण्डु गद जयेत् ॥ ५५ ॥

चिरायता, अडूसा, नीम, हरड़, बहेड़ा, आमला, कुटकी, गिलोय इनका क्वाथ तैयार कर शहद मिला पीने से पाण्डु रोग को जीतता है ॥ ५५ ॥

तथाच—

रजन्यामलकं लोह चूर्णं त्रिकटुकं तथा ।
सर्पिर्मधुयुतं चूर्णं कामला पाण्डु नाशनम् ॥ ५६ ॥

× एकमप्योषधं योगे यस्मिन्यत्पुनरुच्यते ।
मानतो द्विगुणं प्रोक्तं तद्द्रव्यं तत्वदर्शिभिः ॥

हल्दी, आमला, मंडूर भस्म, पिपली, मरिच, शुंठी इनका चूर्ण घी और शहद से सेवन किया कामला और पांडुरोग का नाश करता है ॥ ५६ ॥

कामलारोगेऽञ्जनम् ।

गैरि कामलक युक्त हरिद्रा पेषताहि नयनाञ्जन-मेतत् ।
कामलाप हरणं करणीयमत्र पथ्यमुदिता हि मसूरा: ॥ ५७ ॥

गेरू, आमला, हल्दी इनको बारीक कपड़ छन चूर्णकर नेत्रो में आंजने से कामला (यरकान) का नाश होता है। इस रोग मे पथ्य मसूर ही हितकारी है। अन्य ग्रन्थों मे इस चूर्ण का अञ्जन शहत के साथ लिखा है वैसा ही करना चाहिये ॥ ५८ ॥

अथ क्षय रोगौषधम्

महौषधं कणादेव कुसुमान्यश्वगन्धिका ।
सशर्करं पेयमिदं क्षयघ्नं निम्बवारिणा ॥ ५८ ॥

शुंठी, पिपली, लोंग, असगन्ध, मिश्री इनका चूर्ण कर नीव के जल से सेवन किया क्षय रोग का नाश करता है ॥ ५९ ॥

तथाच—

त्रिकटु त्रिफलामुस्तं त्रुटित्वङ नागकेसरम् ।
रास्ना लवंगं देवद्रुविडङ्गं पद्मपल्लवा: ॥ ६० ॥
ग्रंथिश्चेति सर्वेभ्यो द्विगुणासित शर्करा ।
एतच्चूर्णं क्षयहरं भक्षितस्याद्यथाबलम् ॥ ६१ ॥

त्रिकटु (पिप्पली, मरिच, शुंठी) हरड, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा, छोटी इलायची का दाना, दालचीनी, नागकेशर, रासन, लोंग, देवदारु, विडङ्ग, कमलफूल का पत्ता, पीपलामूल यह सब औषध सम भाग लेकर चूर्ण करे चूर्ण से द्विगुण मिश्री मिलावे यह चूर्ण बलाबल देखकर रोगी को देना चाहिये यह क्षय रोग का नाश करता है ॥६०।६१

श्रीहरिरायशर्म्म विरचिते हरिधारित ग्रंथेऽर्शोरोगादि ।
क्षयान्तचिकित्साध्यायो द्वितीय: ॥ २ ॥ शमिति ।

अथ हिक्कौषधम् ।

कोलास्थि मज्जा मरिचं पिष्ट्वा समधु शर्करम् ।

चूर्ण मेतन्नरो लिह्यात्सर्वहिक्वां विनाशयेत् ॥ ६२ ॥

बदरीफल का मगज, मरिच, मिश्री, यह पीस कर शहत में मिलाय चाटने से सम्पूर्ण हिचकी दूर होती है ॥ ६२ ॥

अथ छर्दिरोगौषधम् ।

लाजैला चन्दनं कृष्णा लवङ्गं पद्मबीजकम् ।

कोल मज्जा मोचरसः प्रियंगुर्नागकेसरम् ॥ ६३ ॥

एतच्चूर्णं मधुसिता युतं प्रातर्लिहेन्नरः ।

छर्दयस्तस्य नश्यन्ति सर्वा अपि न संशयः ॥ ६४ ॥

लाजा (धानका लावा) इलायची, सफेद चंदन, पिप्पली, लौंग, कमल का बीज, बेर का मगज, मोचरस, मेहँदी के बीज, नागकेशर इनका चूर्ण कर प्रातःकाल मिश्री और शहत के संग चाटा हुआ सर्व प्रकार की छर्दि (वमन) का निश्चय से नाश करता है ॥ ६४ ॥

तथाच—

लाजैला देव कुसुमं पद्मबीजं सितामधु ।

प्रातरेतन्नरो लिह्याच्छर्दिरोग विनाशनम् ॥ ६५ ॥

धान की खील, लौंग, कमल का बीज, मिश्री और शहत से इनका चूर्ण प्रातः चाटा हुआ छर्दि रोग का नाश करता है ॥ ६५ ॥

अथ श्वासौषधम् ।

त्र्यूषणं पौष्करं शृङ्गी शटी, भर्गी च तोयदः ।

एतच्चूर्णं जयेच्छ्वासंपीतं संतप्त वारिणा ॥ ६६ ॥

पिप्पली, मरिच, शुंठी, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, कचूर भारंगी, नागरमोथा, इनको सम भाग लेकर कूट पीसकर बारीक चूर्ण, करे, यह चूर्ण गरम जल से सेवन किया श्वास (दमा) का नाश करता है ॥ ६६ ॥

अथ श्वासकास चूर्णम् ।

क्षुद्रा पुष्करमूलञ्च वासा शुंठी कुलत्थकम् ।
तप्तोदकेन संपीतं श्वास कास विनाशनम् ॥ ६७ ॥

कटेरी, पोहकरमूल, अडूसा, शुंठी, कुलथी इस चूर्ण को उष्ण जल से सेवन किया जाय तो श्वास, कास, का नाश होता है ॥ ६७ ॥

कासघ्नीवटी ।

महौषधं दाडिमत्वक् शृंगी भार्गी विभीतकम् ।
कणा चैषां बटी वक्त्रे कासघ्नी धारिता निशि ॥ ६८ ॥

शुंठी, अनारफल की छाल, काकड़ासिंगी, भारंगी, बहेड़ा, पिप्पली इनको कूट पीस कर गोली बनावे यह गोली रात को मुख में धर कर रस चूसते रहना चाहिये इससे कास (खांसी) का नाश होता है, शहत से गोली बनाई जाय तो अच्छी है ॥ ६८ ॥

तथाच—

वासा शुंठी कणाक्षौद्रवटी कास विनाशिनी ।
क्षुद्रा वासा कणा शुंठी चव्य मुस्ताम्बु नाथवा ॥ ६८ ॥

अडूसा, शुंठी, पिप्पली इनकी शहत से गोली बनावे अथवा उपरोक्त औषधियों की गोली अधोलिखित कटेरी, अडूसा, पिप्पली, शुंठी, चवक, नागरमोथा इनका क्वाथ तैयार करे इस में गोली बनावे यह गोली भी रात को मुख में धरनी चाहिये इससे कास का नाश होता है ॥ ७० ॥

मन्दाग्नौचूर्णम्

त्रिवृत्कणा भया शुंठी सौवर्चल समन्विता ।
सर्पिष्य तप्ततोयेन पीतं वन्हि करं परम् ॥ ७० ॥

निशोत, पिप्पली, हरड़, शुंठी सोंचर नमक यह सम भाग ले बारीक चूर्ण कर गरम जल से सेवन किया मन्दाग्नि को दीपित करता है और पाखाना साफ लाता है ॥ ७१ ॥

तथाच–

पटु द्वयं विडंगञ्च त्रिफला त्र्यूषणं त्रिवृत् ।
लवंगं चित्रकं हिगु दाडिमं जीरक द्वयम् ॥ ७१ ॥
यवानी चेति सम्भाव्य त्रिभिर्निम्बूकजैः रसैः ।
प्रातष्टकं द्वयं चूर्णं दत्त मन्दाग्नि बोधनम् ॥ ७२ ॥

दोनो नमक—(सेन्धा, सोचर नमक) विडग हरड़, बहेड़ा आमला, पिप्पली, मरिच, शुंठी, निशोत, लौंग, चीता, घी में भुनी हींग अनारदाना, दोनो जीरा (काला और सफेद) अजवायन, इन औषधियो का सम भाग वारीक चूर्ण कर कागजी नीबू के रस की तीन भावना देवे बाद छाया में सुखा कर रख ले, इस चूर्ण को ८ मासा सेवन करने से मन्दाग्नि दीप्त होता है, हाजमा के लिये यह परमोत्तम है ।

बिसूचिकाखल्ली शूलौषधम् ।

हेमाह्वा सैन्धवं कुष्टं तप्ततैलं विमिश्रितम् ।
खल्ली शूल बिसूचिघ्नं मर्दितं कर पादयोः ॥ ७३ ॥

+ चोक, सैंधा नमक, कूठ इन को बारीक पीस तिलो के तेल में पकावे इसकी हाथ और पाओ के तलुबो मे मालिश करने से, खल्ली शूल, बिसूचिका (कालरा हैजा) मे विशेष लाभ होता है ॥ ७३ ॥

श्रीहरिराय शर्म्म विरचिते हरिधारित ग्रन्थे
हिक्का, छर्दि, श्वास, कास, मन्दाग्नि, विशूचिका रोग
प्रतीकारस्तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

—०—

× सत्यानासी (वज्रकटेली) की जड को चोक कहते है ।

अथांडबृद्धिरोगौषधम् ।

सुपक्वं सार्षपं तैल सैंधवाजाजि रामठैः ।

प्रातः संलिप्यतेनांडवृद्धिःशान्ति मुपेत्यलम् ॥ ७४ ॥

सेंधानमक, जीरा, हींग, सम भाग कूट पीसकर सरसों के तैल मे पकाकर सुवह अंडकोशो पर लेप करने से निश्चय ही अंडवृद्धि रोग शान्त होता है ॥ ७४ ॥

अथ प्रमेहौषधम् ।

वंशजं दाड़िममुकुले समखडे चूर्णिते दशाहान्तः ।

षट् टंक मिदं चूर्णं भुक्तं संचूर्णं यत्यलं मेहान् ॥ ७५ ॥

तवाशीर, अनार के फूल इनका सम भाग चूर्ण कर चूर्ण के वराबर मिश्री मिलावे २४ माशा इस चूर्ण को १० दिन तक सेवन करने से सब प्रकार के प्रमेह नष्ट होते है ॥ ७५ ॥

तथाच-

भद्रैला समखंड चूर्णं कर्ष प्रमाण तो भुक्तम् ।

हन्ति प्रमेह मथवासमसितमेला शिलाज शंखिन्या ॥ ७६ ॥

बड़ी इलायची का दाना और मिश्री, दोनो का सम भाग चूर्ण कर एक तोला मात्रा के परिमाण से सेवन किया प्रमेहो का नाश करता है अथवा इलायची, शिलाजीत उत्तम शुद्ध, शंखपुष्पी (शंखाहूली) सम भाग चूर्ण कर सब चूर्ण के समान मिश्री मिला भक्षण करने से प्रमेह नष्ट होते हैं ॥ ७६ ॥

अथ मूत्रकृच्छ्रौषधम् ।

एला कृष्णा गोक्षुर रेणुका च वासरेणुश्चाश्म भेदो मधुश्च ।

क्वाथो ह्येषामश्मजिच्छर्कराढ्यः पीतो नाशो मेहकृच्छ्राश्मरीणाम् ॥ ७७

इलायची, पिप्पली, गोखरू, सम्भालु के बीज, अडूसा, एरण्ड-मूल, पाषाणभेद, मुलहठी इनका विधि पूर्वक क्वाथ तैयार कर मिश्री मिलाकर सेवन करे तो इससे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, (पथरी का विनाश होता है ॥ ७७ ॥

तथाच—

वासैकैरण्डचूर्ण च दध्नामूत्राख्य कृच्छ्रजित्।
यवसारस्तु सितया सर्व कृच्छ्र निवर्हणः ॥ ७८ ॥

अडूसा, इलायची, एरंडमूल इनकाचूर्ण दही से सेवन करने पर मूत्रकृच्छ्र का नाश होता है। अथवा—

यवक्षार मिश्री से भक्षण किया सब प्रकार केमूत्रकृच्छ्रों का विनाश करता है ॥ ७८ ॥

अथ मूत्ररोधौषधम् ।

आखुविष्टा मेव पिष्टां जल प्लुष्टांतु लेपयेत्
नाभिदेशे ततो मूत्र प्रवाहो जायते क्षणात् ॥ ७९ ॥

मूषक (चूहा) की विष्टा जल में पीस कर नाभि में लेप करने से तत्क्षण मूत्र का प्रवाह चलेगा खुलकर पिशाब आने से रोगी कष्ट से मुक्त होता है ॥ ७९ ॥

तथाच—

त्रिकंटको यवासश्च कर्णिकारोश्म भेदकः ।
क्वाथ एषां मधुयुतो मूत्रं वाहयति क्षणात् ॥ ८० ॥

गोखरु, धमासा, कोयल, पाषाणभेद इनका क्वाथ, शहत मिला कर पिलावे से मूत्र प्रवाह चलता है ॥ ८१ ॥

अथाश्मर्यौषधम्

वारुणस्य त्वचं श्रेष्टं शुंठी गोक्षुर संयुतम् ।
यवक्षारं गुडं दत्वा काथं पीत्वा पिबेद्धितत् ॥ ८२ ॥
अश्मरी वातजां हन्ति चिरकालानु बन्धिनीम् ।

बरुण (बरणां) वृक्ष की छाल, सोठ, गोखरू इनका काथ तैयार कर यवक्षार पुराना गुड मिला कर पिलाने से वायु सम्बन्धी पुरानी अश्मरी (पथरी) नष्ट होती है ॥ ८२ ॥

अथापस्मारौषधम्

पुष्करं देवदारुश्च ब्रह्मी शुण्ठी शठीवचा ।
किरात ग्रन्थिकं दूर्वा शिवा कुष्टं पयोधराः ॥ ८३ ॥
शिरीषत्वक् तथैषां वैकाथोऽपस्मार रोगजित् ।
बिसूचिकोन्मादहरः कथिताप्येष एवहि ॥ ८४ ॥

पोहकरमूल, देवदारू, ब्राह्मी, शुंठी, कपूरकचरी, वच, चिरायता, पीपलामूल, दूर्वा, (दूब) हरड़, कूठ, नागरमोथा, शिरीष की छाल इनका काथ पिलाने से अपस्मार (मृगी) का नाश होता है ॥ ८३-८४ ॥

और वही काथ पिलाने से बिसूचिका (हैजा) कालरा, उन्माद का नाश करता है ।

स्नीहुण्डमध्ये मरिचान्येकविंशत्यहस्थिताम् ।
जलेन धृष्ट्वानस्यं स्यादपस्मार विनाशनम् ॥ ८५ ॥

थोहर का एक दण्ड लेकर इसके गूदे में कालीमिर्च भरकर २१ दिन उसमें रहने के बाद निकाल कर मरिचोंको बोतलमे भर रखे इन मरिचों का जल में पीसकर नसवार लेने से अपस्मार का नाश होता है ॥ ८६ ॥

ब्राह्मीघृतम् ।

ब्राह्मी रस वचा कुष्ठं शंखिनीभिः स्मृतं घृतम् ।
गव्यं शुद्ध मिदंपीत मुन्मादापस्मृती हरेत् ॥

ब्राह्मी का स्वरस, वच, कूठ, शंखपुष्पी इन औषधों से गौघृत घृत पाक विधि से तैयार करे यह ब्राह्मी घृत है । इसके सेवन से उन्माद (पागलपना) और अपस्मार का नाश होता है ॥ ८७ ॥

—:०:—

पटोल त्रिफलारिष्टं वासाखदिर कुंडली ।
चूर्णं तूर्णं जयेदेतत्कुष्टं नीरेणपायितम् ॥ ८८ ॥

पर्वल, हरड़ बहेड़ा, आमला, नीम, अडूसा, कत्था, गिलोय इनका चूर्ण बनाकर जल से सेवन किया हुआ शीघ्र ही कुष्ट का नाश करता है ॥ ८८ ॥

तथाच ।

मंजिष्टा त्रिफलारिष्ट गुडूची कटुका निशा ।
देवदारु वचा चेति क्वाथो बाताश्रितं जयेत् ॥ ८९ ॥

मजीठ, हरड़ बहेड़ा, आमला, नीम, गिलोय, कुटकी, हलदी, देवदार, वच, इनका क्वाथ सेवन किया हुआ बाताश्रित कुष्ट का नाश करता है ॥ ८९ ॥

तथाच

गुंजारिष्ट वचा चित्रं कुष्ठंकांजिक पेषितम् ।
श्वेत कुष्ठ विजयते लेप एषो न सशयः ॥

घुंगची (रत्ती) नीम के बीज, वच, चीता, कूट, इनको कांजी में पीस कर लेप करने से निश्चय से श्वेत कुष्ट दूर होता है ॥ ९० ॥

तथाच-

मनःशिला वङ्गभस्म सोमराजी च चित्रकम् ।
कांजिकेन समापिष्टं कुष्टं लेपनतो जयेत् ॥ ६१ ॥

मनशिला, वङ्ग (रांगा) की भस्म, वाकुची, चीता इनको कांजी में वारीक पीसले इसका लेप करने से कुष्ट का नाश होता है ॥६१ ॥

सर्व कुष्ट हरोलेपः ।

हरितालं वचा ब्रह्मी शिवा हिंगुकटुत्रिकम् ।
सोमराजी हरिद्रेद्वे सुराष्ट्री कुष्ट चन्दनम् ॥ ६२ ॥
सर्जिकञ्च यवक्षारं गन्धकं पारदं तथा ।
सिद्धार्थाश्च विडंगानि प्रपुन्नाटश्च सैन्धवम् ॥६३॥
शिवाम्बुना लेपएषो मासार्द्धात्सर्वकुष्टजित् ।
गंडमाला दद्रुकंडू कंठमालां विचर्चिकाम् ॥६४ ॥

हरताल तवकी, वच, ब्रह्मी, हरड़, हिंगु, पिप्पली, मरिच, सोंठ, वावची, हलदी, दारुहलदी, फटकरी, कूठ, सफेद चन्दन, सज्जीखार, यवक्षार, गन्धक, पारा, सफेद सरसो, विडंग, प्रपुन्नाट, (पवाड) सेन्धानमक प्रथम गन्धक, और पारे की कज्जली कर पीछे सब औषधियों का चूर्ण मिला के आमलो के रस मे घोटकर लेप करने से १५ दिन के प्रयोग से सम्पूर्ण कुष्टों का नाश होता है ॥ ६४ ॥

तथा—गंडमाला, दद्रु, कंडू, कंठमाला, विचर्चिका भी दूर होते हैं ।

अथ पामालेपः ।

सिन्दूरं मरिचं तुल्यं महिषी घृत संयुतम् ।
मथित्वा लेपनादेव पामा रोग विनाशनम् ॥ ६५ ॥

सिन्दूर मरिच सम भाग लेकर भैस के घी में मिलाकर खूब हल करे इसका लेप करने से पामा (खुजली) रोग का विनाश शीघ्र ही होता है ॥ ६५ ॥

पामा दद्रु विचर्चिकासु लेपः।

प्रपुन्नाटस्य बीजानि गन्धकं हिंगुलं गुडम्।
विडंगसिन्दूरनिशाः शण जातीफलानि च ॥९६॥
हेमाह्वारिष्टताम्बूलरसाश्चैकत्र पेषिताः।
एषांलेपेन नश्यन्ति पामा दद्रुविचर्चिकाः ॥ ९७ ॥

पवांड के बीज, गंधक, सिंगरफ, गुड़, बिडंग, सिन्दूर, हलदी, सन के बीज, चोक, नीम इनको बारीक पीस पान के रस में घोटकर लेप करने से पामा, दद्रु, बिचर्चिका रोग का विनाश होता है ॥९७॥

लूता विषौषधम्।

सारिवापद्म बीजानि निर्गुंडी बीज चन्दनम्।
कुष्टेन सहितं पिष्टं नीरे लूताविषापहम् ॥ ९८ ॥

सारिवा (अनन्तमूल) कमलबीज, संभालु के बीज, चन्दन कूठ इनको जल में पीसकर लेप करने से लूता (मकड़ी) का विष (जहर) शान्त होता है ॥ ९८ ॥

—•—०—

अथ सिध्मौषधम्।

संपिष्य रजनीमेकां कदलीपत्र भस्मना।
नीरेणसहलेपोऽयं सिध्मारोग निषूदनः ॥९९॥
कर्पूरं चन्दनं तालं टंकणं मूलकस्य च।
बीजानि जंभीर रसैर्लेपः सिध्मा विधूननः ॥१००॥
गंधकं चन्दनं पिष्ट्वा रसैर्निम्बूक सम्भवैः।
सप्ताहांतरतः सिध्मालेपनादस्य नश्यति ॥१०१

केवल हल्दी का चूर्ण और केला के पत्ते की भस्म दोनों स भाग लेकर जल में पीस लेप करने से सिध्मा का नाश होता है ॥९९ ॥

अथवा—कपूर, चन्दन, हडताालतवकी, सुहागा, मूली के बीज इनको जम्भीरी के रस में पीसकर लेप करने से भी ÷ सिध्मा का नाश होता है।

अथवा—गन्धक, चन्दन इन दोनों को कागजी नीबूके रस से घोट कर एक सप्ताह (हफ्ता) इसका लेप करने से सिध्मा का नाश होता है॥ १०१॥

अथश्वान विषौषधम्।

रामठं शङ्खपुष्पी च पिष्ट्वा संलिप्यतन्मुखम्।
सर्षपाक्ताश्वत्थ दलं दत्वा काशविषंजयेत्॥ १०२॥

हींग, शङ्खपुष्पी को पीसकर विष स्थान पर लेपकर बाद उसपर सरसों का लेपकर पीपल के पत्ते बांधने से काश विष की शान्ति होती है॥ १०२॥

अथ शस्त्राघातौषधम्।

काकजङ्घा जटाचूर्णं शस्त्रघातानिधापयेत्।
पीडां रक्तप्रवाहञ्च क्षणादेव विनाशयेत्॥ ३॥

काकजङ्घा एक प्रसिद्ध बूटी हर जगह मिल सकती है, इसकी जड़ का चूर्ण व्रण (शस्त्र के जखम) पर बांधने से जखम चलते हुए खून के प्रवाह को रोकता है और पीड़ा भी शीघ्र ही शान्ति होती है॥ ३॥

श्रीहरिराय शर्म्म विरचिते हरिधारित ग्रंथे अण्डवृद्धि
प्रमेह मूत्रकृच्छ्र मूत्ररोधापस्मारोन्मादादि
प्रतीकारोनाम चतुर्थोऽध्यायः॥ ४॥

———

÷ सिध्मा—इसे भाषा में बनरफ कहते हैं इसमें छोटे २ दाग शरीर में पड़ते हैं

अथ वातव्याध्याधिकारः ।

निगु'डी विजयासु'डी माकेवाणां सुचूर्णकम् ।
वात व्याधि हरं प्रोक्त मुक्तं टङ्कद्वयं सितम् ॥ ४ ॥

संभालु, भांग, सु'डी, भांगरा इनका सम भाग चूर्ण कर ८ मासा परिमाण मात्रा सेवन किया बातव्याधि को हरता है ॥ ४ ॥

वातघ्नीवटी ।

विडंग पञ्चकोलानि कारबीचाश्व गन्धिका ।
यवानी चेति सचूर्ण्य कुट्टयेद् द्विगुणे गुड़े ।
टङ्क द्वयं त्रयं वापिवटी बातरुजापहा ॥ ६ ॥

विडंग × पञ्चकोल, कलौंजी, असगन्ध, अजवायन, इनका सम भाग चूर्ण करे चूर्ण से दो गुणा अधिक पुराना गुड़ मिलाकर इमामदस्ता में धर कर अच्छे प्रकार कूट कर दो टंक अथवा तीन टंक की गोली बनावे (टंक ४ मासे का होता है) यह गोली बात व्याधि का नाश करती है ॥ ६ ॥

वात पीड़ाहरः कषायः ।

शुंठी रास्ना देवदारु ह्येरंडा मृतवल्लरी ।
पीतः कषाय एतेषां बातपीड़ा हरः परः ॥ ७ ॥

सोंठ, रहसन, देवदार, एर'डमूल, गिलोय इनका काथ बातव्याधि नाशक है इसे अन्य ग्रन्थों में (रास्नापञ्चक) कहते हैं यह सप्तधातु गत वात नाशक है सामवात का नाशक है ॥ ७ ॥

× पिप्पली पिप्पलीमूल चव्य चित्रक नागरैः ।
॥ इति पंचकोलम् ॥

अथ लघु विष गर्भ तैलम् ।

धत्तूरबीजं गुंजांच विषकर्ष द्वयं पृथक् ।
तुल्य धत्तूरकरसं तैल प्रस्थे विपाचयेत् ॥ ८ ॥
विष गर्भ मिद तैलं मर्दनाद्वातरोगजित् ॥

धतूराके बीज, घुघची, (रत्ती) बिष दो २ तोला प्रत्येक औषधि ले इनके बराबर धतूरा का रस, एक प्रस्थ तिल तैल, इसे तैल पाक विधान से तैयार करे यह लघु विष गर्भ तैल है, इसकी मालिश करने से वात रोग नष्ट होते हैं ॥ ८ ॥

सर्ववातरोगेषु त्रयोदशांग गुग्गलुः ।

शुंठी ज्योतिष्मती रास्ना वाजिगन्धा त्रिकंटकम् ॥ ९ ॥
त्रिवृद्गुडूची कचूरं शतपुष्पा शतावरी ।
पिप्पली पिप्पलीमूल यवानी च मिसिरतथा ॥ १० ॥
गुग्गलुः सर्वं तुल्याशस्त दर्द्धगोघृतं क्षिपेत् ।
कुट्टयित्वावटी कार्या टङ्क युग्म प्रमाणतः ॥ ११ ॥
घृतेनवाकोष्ण जलेन वापि,क्षीरेणवामांसरसेनवापि ।
कटी ग्रहं योनिभवविकारं कुब्जत्वपंगुत्व हनुग्रहञ्च ॥ १२ ॥
जानु नाडी पाद पृष्ठ मज्जा सधि गतानिलम् ।
निहन्ति सर्वान्वातोत्थान रोगानेषा वटी शुभा ॥ १३

शुंठी, मालकंगुनी, रहसन, असगंध, गोखरू, निशोत, गिलोय, कचूर, सोवा के बीज, शतावर, पिप्पली, पीपलामूल, अजवाइन, सोफ इनका सम भाग चूर्ण करे चूर्ण के समान गुग्गलु उत्तम शुद्ध मिलावे गुग्गुल से आधा गाय का घी सब इकट्ठी चीज कर इमामदस्ता में धर कर भली भांति चोटें लगावे । यदि लाख चोट लगाई जाय तो अत्युत्तम है, इसकी मात्रा दो टंक (८ मासा) की है परन्तु ८ मासा की गोली ही का नियम नहीं समझना चाहिये बलाबल के अनुसार वैद्यवर

मात्रा कल्पना करले। गो घृत अथवा गर्म पानी, गोदुग्ध, मांस के रस से सेवन करना चाहिये। इससे कमर का जकड़ना, योनिदोष, कुबड़ापन हनुग्रह और जङ्घा, नाड़ी, पाद, पीठ, मज्जा तथा सन्धिगत वात और भी सम्पूर्ण वात रोगों का नाश होता है॥ १३॥

—०—

अथ पित्तोद्रेकौषधम्।

चन्दनोशीर कर्पूरं ह्येलामलक मिश्रितम्।
शीतोदकेन संपीतं पित्तोद्रेक निवारणम्॥१४॥

चन्दन, खस, कपूर, इलायची, आमला इनका सम भाग चूर्ण कर शीतल जल से सेवन करे इसके सेवन से अत्यन्त बढ़ा हुआ भी पित्त शान्त होता है॥ १४॥

अथ पित्तदाहे लेपः।

बदरपल्लवामांसी तंडुला मलकानि च।
शीताम्बुनापाद लेपः पित्तदाह हरः परः॥ १५॥

बेर के पत्ते, बालछड़, चांवल, आमला इनको शीतल जल में बारीक पीस कर पावों के तलुवों मे लेप करने से पाद दाह नष्ट होता है॥ १६॥

अथ क्लेदौषधम्।

खर्जूरैला पद्म बीजं पिष्ट्वा शीताम्बुनासह।
पिबेत्तु क्लेदनाशाय छर्दिनाशाय चोत्तमम्॥ १७॥

खजूर (छोहारा) इलायची, कमल का बीज, शीतल जल में पीसकर पिलाने से क्लेद (जी का मिचलाना) और बमन के नाश के ये उत्तम है॥ १७॥

अथ कफकोपौषधम्

कुंकुमं मरिचं भार्गी पिप्पली मृतताम्रकम् ।
लवङ्गश्चेति ताम्बूलदलैः शाणार्द्ध मानतः ॥१८॥
चूर्णं हन्ति कफं वृद्धं कास श्वास ज्वरन्तथा ।
लवङ्गं पिप्पली भार्गी कण्टकारी महौषधम् ॥ १६ ॥
चूर्णमेषां कफहरं पीतं शीताम्बुनासह ॥

केशर, कालीमिर्च, भारङ्गी, पिप्पली, उत्तम ताम्रभस्म, लौंग इनका बारीक चूर्ण करले । यह चूर्ण २ मासा पान के रससे सेवन किया बढ़े हुए कफ और कास श्वास तथा कफ ज्वर का नाश करता है ।

अथवा—लवंग, पिप्पली, भारंगी कटेरी, शुंठी इनका चूर्ण शीतल जल से सेवन किया कफ का नाश करता है ॥ १६ ॥



अथ गंडमालौषधम ।

विश्वौषधि समंभार्गी पिष्टा तंडुल वारिणा ।
कण्ठलेपनं मात्रेण गंडमाला मलं जयेत् ॥ २० ॥

शुंठी के समान भाग भारंगी, चावलों के धोवन से पीस कंठ में लेप करने से कुछ दिन के अभ्यास से गंडमाला रोग का नाश होता है ॥ २० ॥

काञ्चनार गुग्गुलुः ।

पालानां दशकं ग्राह्यं काञ्चनार तरुत्वचः ॥ २१ ॥
पलत्रयं त्र्यूषणञ्च त्रिफलाषट् पलानि च ।
वारुणा पलमेकञ्च ÷ त्रिसुगन्धं त्रिकर्षकम् ॥ २२ ॥
कौशिकं सर्वतुल्यांशं कृत्वा टंकमितांवटीम् ।
खदिरस्या भयावा मुंड्या वाक्वथितेनवै ॥ २३ ॥

÷ त्वगेलापत्र कैस्तुल्यैस्त्रि सुगन्धं त्रिजातकम् ।

दत्वाहरेद्गंडमाल्यं व्रणं कुष्टं भगन्दरम् ।
गुल्मार्बुद प्रमेहांश्च गुग्गुलुः काञ्चनारकः ॥ २४ ॥

कचनार वृक्ष की छाल १० पल (४० तोला) पिप्पली, मरिच, सोठ यह तीनो तीन पल अर्थात् प्रत्येक औषधि ४-४ तोला, हरड़ बहेड़ा, आमला प्रत्येक दो २ पल वरुण वृक्ष की छाल १ पल (४ तो०) दालचीनी, इलायची, तेजपत्र एक २ तोला सम्पूर्ण औषधि द्रव्य के के समान उत्तम शुद्ध गुग्गुलु मिलाकर सुरीति से इमामदस्ते में कूट लेना चाहिये, बाद ४ मासा की गोली बनाकर खदिर (खैर) की छाल का या हरड़ व मुंडी के क्वाथ से सेवन कराया हुआ यह कांचनार गुग्गुलु गंडमाला, व्रण, कुष्ट, भगन्दर, गुल्म, अर्बुद प्रमेहादि अनेक रोगों का नाश करता है ॥ २४ ॥

अथ मुख रोगौषधम् ।

त्वक्क्षीरी खादिरंसारं मुरातु द्विगुणामता ।
चुर्णयित्वा मुखेक्षिप्ता मुखपाकं विनाशयेत् ।

तवाशीर, कत्था सम भाग बालछड़ दोनो के बराबर लेकर बारीक चूर्ण करले यह चूर्ण मुख में बुरकाया मुख पाक को शान्त करता है ॥ २५ ॥

अथ दन्त रोगौषधम् ।

मुस्तक खादिरः सारोवासारोध्रं सिता कटुः ।
मञ्जिष्ठा कुंकुमं तत्र पिष्ट्वा दन्तेषुमर्दयेत् ॥ २६ ॥
रक्तस्रावं दन्तपीडां ध्रुवं कीटांश्च नाशयेत् ।

नागरमोथा, कत्था, अडूसा की छाल, लोध, मिश्री, कुटकी, मजीठ, केशर यह सम भाग लेकर बारीक चूर्ण करले इस चूर्ण को दातन की कूची से अथवा बुरश से दांतो के मांस को छोड़ कर दांतो में लगे हुए कीड़ो का निश्चय से नाश होता है ॥ २६ ॥

अथ कीलौषधम्

सर्षपः सैन्धवं लोध्रं वचा चेति जलेनह ।

पिष्ट्वा वदन मालिप्य मुखकीलान्वि नाशयेत् ॥ २७ ॥

सफेद सरसों, सेंधा नमक, लोध, बच इनको जल में पीस कर मुख में गाढ़ा लेप करे, लेप मैदा के मानिन्द बारीक होना चाहिये लेप इतनी देर तक रहना चाहिये कि ज्यादा सूखने न पाये बाद उसे हाथ से खूब मलकर उतार दो पानी से मुंह धो डालो ऐसे ही कुछ दिन के अभ्यास से जवानी के कील नष्ट होते है ॥ २७ ॥

अथ मुख व्यंगौषधम्

स्थौणे य सर्षपाः श्वेतास्तिलाः कृष्णाश्च जीरकम् ।

पयसा लिप्य वदनं मुखव्यंगं विनाशयेत् ॥ २८ ॥

नख, सफेद सरसो, काले तिल, जीरा इनको जल में पीस कर मुख में लेप करने से मुख की झाईं का नाश होता है ॥ २८ ॥

अथवा

सैन्धवं रजनी कुष्ठं लोध्रं निम्बूकजैः रसैः ।

पिष्ट्वा संलिप्यवदनं मुख व्यंग हरं परम् ॥ २९ ॥

सेंधा नमक, हल्दी, कूठ, लोध यह कागजी नीबू के रस में बारीक पीस कर लेप करने से भी झाईं नष्ट होती है ॥ २९ ॥

अथ नासारोगौषधम्

दूर्वा दाडिम पुष्पाणि कौसुंभं च हरीतकी ।

शीताम्बुना समालिप्य नस्यं रक्तस्रुति हरेत् ॥ ३० ॥

दूब, अनार के फूल, कुसुम के फूल, हरड़ शीतल जल में पीस कर नसवार लेने से नकसीर दूर होती है ॥ ३० ॥

तथाच पीनसे

मरिचं देवदाली च तिलयुग्म प्रमाणतः ।
अथवा त्र्यूषण गुडं नस्यं पीनस नाशनम् ॥ ३१ ॥

मरिच, देवदाली (घगर बेल) दो रत्तल परिमाण इनकी नसवार लेने से पीनस रोग नष्ट होता है ।

अथवा पिप्पली, मरिच, शुंठी और गुड़ इनका चूर्ण भी पीनस नाशक है ॥ ३१ ॥

अथ नेत्र रोगौषधम्

सौवीरं सैन्धवं शंखं त्र्यूषणं च मनःशिला ।
धात्रीफलं शर्करा च सामुद्रफेन मेवच ॥ ३२ ॥
अजाक्षीरेणांजनंस्यात्सर्वं नेत्रामयापहम् ॥ ३३ ॥

सुरमा, सेंधा नमक, शंख की नाभी, पिप्पली, मरिच, सोंठ, मनसिला, आमला, मिश्री, समुद्रझाग बकरी के दूध मे खरल कर रक्खे बाद बकरी के दूध में ही घिसकर नेत्रों में अञ्जन करने से सम्पूर्ण नेत्र रोग नष्ट होते हैं ॥ ३३ ॥

पोटली

कासीसं जीरकंतार्क्ष्यं स्फटिका त्रिफला मिसिः ।
निशा सूक्ष्मच्छदाराजी लोध्र माफूक मेवच ॥ ३४ ॥
सञ्चूर्ण्येषां पोटलीतु नेत्रपीडापनोदिनी ॥

हीरा कसीस, जीरा, रसौत, शुद्ध फिटकरी, हरड़, बहेड़ा, आमला, सौंफ, हल्दी, छोटी जामुन, राई, लोध, अफीम इनका बारीक चूर्ण कर पोटली तैयार करे, यह पोटली नेत्र पीड़ा को हरती है ॥ ३४ ॥

अथ कर्णरोगौषधम् ।

तिलार्क पत्र लशुनरसेन परिपूरयेत् ।
कर्णस्य शूल शमनं पूयास्र विनाशनम् ॥

तिल काले, पके हुये आक के पत्तों का रस, लहसुन का रस, तिल कूट कर मिलावे इनको इकट्ठा कर गरम कर सुहाता रस से कान भरदे इससे कान का दर्द दूर होता है कान से बहती पीव और खून भी बन्द होता है ॥ ३५ ॥

तथाच—

देवदारु बचा सुंठी शिफा सैंधव मेकतः ।
अजामूत्रेण सन्तप्यं पूरणात्कर्णशूलजित ॥ ३६ ॥

देवदार, वच, शुंठी, वटजटा, सेधा नमक बकरी के मूत्र में घोट कर कान में भर देने से कान की पीड़ा दूर होती है ॥ ३६ ॥

शिरोरोगौषधम् ।

कुष्ट कट्फलकैरण्ड देवदारु समन्वितम् ।
शिरोर्ति वातजां हन्ति कांजिकेनावलेपितम् ॥ ३७ ॥

कूट, कायफल, एरण्ड, देवदार इनको कांजी से पीसकर मस्तक पर लेप करने से वात का शिर दर्द शान्त होता है ॥ ३७ ॥

अथ कफशिरोर्तौ ।

एरण्डराश्ना कुष्टानि वचामांसी च मुस्तकम् ।
संवृद्धदारु तप्ताम्बु पिष्टंलेपाच्छिरोर्तिजित् ॥ ३८ ॥

एरण्डमूल, रहसन, कूट, वच, जटामासी, नागरमोथा, विधारा, देवदार इनको गरम जल से पीस कर लेप करने से कफ की शिरो-व्यथा शान्त होती है ॥ ३८ ॥

अथ पित्तशिरोर्तौ

कसेरुकाभया दुर्वा पद्मजोशीर चन्दनम् ।
पित्तोत्थित शिरःशूल हन्तिलेपन मात्रतः ॥ ३६ ॥

कसेरू, हरड़, दूबघास, कमलबीज, खस, सफेद चंदन इनका शीतल जल से लेप करने से पित्त की पीड़ा शांत होती है ॥ ३६ ॥

त्रिदोषजशिरोर्तौ

कुष्टं कट्फलकैरण्डमूलं मरिच मिश्रितम् ।
तप्तोदकेन सलिप्येत त्रिदोषोत्थ शिरोर्तिजित ॥ ४० ॥

कूट, कायफल, एरण्डमूल, मरिच इनको गरम जल में पीसकर लेप करने से त्रिदोष की शिर पीड़ा शांत होती है ॥ ४० ॥

अथार्द्ध शिरोर्तौलेपः ।

मधुयर्ष्टा तथा कुष्ठ शारिवा पिप्पली तथा ।
कांजिकेन सुसापिष्ट्वा लेपादर्द्ध शिरोर्तिनुत् ॥ ५१ ॥

मुलहटी, कूट, उसवा, पिप्पली इनको × कांजी में पीस लेप करने से आधे शिर का दर्द दूर होता है ॥ ४१ ॥

तथाच—

धत्तूरबीज नस्येन शिरस्तोदो विनश्यति ॥ ४२ ॥

धतूरा के बीजो का चूर्ण कर नसवार लेने से भी आधे शिर का दर्द दूर होता है, थोड़ा सा चूर्ण प्रयोग करना चाहिये बाद घी की नसवार ले लेनी उत्तम है ॥ ४२ ॥

अथ केशवर्द्धनौषधम्

गौक्षुरस्तिल पुष्पाणि युतानि मधु सर्पिषा ।
एषां लेप प्रयोगेन केशवर्द्धनक स्परम् ॥ ४६ ॥

गोखरू, तिलो के फूल, कूट कर शहद और घी मे मिलाकर केशो पर लेप करने से कुछ दिन के अभ्यास से केश बढ़ कर लम्बे हो जाते हैं और कोमल भी रहते है काले भी होते है ॥ ४६ ॥

×कुल्माषधान्यमाण्डादिसाधितं काञ्जिकं बिदुः । परन्तु वृद्ध वैद्य प्रायः सिरके का उपयोग लेपादि मे करते है ।

अथेन्द्र लुप्तौषधम्

दन्ती दन्तस्य भस्मापि रसांजन समन्वितम् ।
अजाक्षीरेण संलिप्त मिन्द्रलुप्त निवारणम् ॥ ४३ ॥

हाथी दांत की भस्म, रसोत, सम भाग बकरी के दूध में पीसकर लेपन करने से इन्द्र लुप्त (बाल चरा) नष्ट होकर बाल पैदा होने लगते है ॥ ४३ ॥

अथ श्वेत केश रञ्जनम्

भृङ्गराजो लोह चूर्ण त्रिफला नीलिका दलम् ।
अजाक्षीरेण संलिप्तं केशरञ्जन मुत्तमम् ॥ ४४ ॥

भांगरा, लोहे का चूर्ण, हरड़, बहेड़ा, आमला, नीली (वसमा) इनका लेप बकरी के दूध मे घोट करने से सफेद बाल काले होते हैं ॥ ४४ ॥

इति हरिधारते वातव्याध्या दिशिरोरोगान्त प्रतीकारो नाम
पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ स्त्री रोग प्रतीकारः

ह्रीवेरं चन्दनं चैव त्वक्क्षीरी नागकेशरम् ।
तण्डुलोदक संयुक्तं पीत प्रदर नाशनम् ॥ ४५ ॥

नेत्रबाला, चन्दन, तबासीर, नागकेशर इनका चूर्ण चावलों के धोवन से सेवन करने पर प्रदर का नाश करता है ॥ ४५ ॥

तथोच

सिततण्डुल संमिश्रं पीत्वान्ते नागकेशरम् ।
प्रदरान्मुच्यते योषा पथ्यं शालिमसूरका: ॥ ४६ ॥

नागकेशर का चूर्ण बासमती के चावलों के धोवन से सेवन करने पर स्त्री प्रदर राग से मुक्त होती है, इसमें पथ्य भात और मसूर देना चाहिये ।

अथ पुष्प करणौषधम् ।

त्र्यूषणं ब्रह्मदंडी च तिलक्वाथेन संपिवेत् ।
जायते पुष्प वाहुल्यम पुष्पाया: स्त्रियोध्रुवम् ॥ ४७ ॥

पिप्पली, मरिच शुंठी, ब्रह्मदंडी इनका चूर्ण काले तिलों के क्वाथ से सेवन किया फूल न आने वाली अथवा जिसका फूल आना बन्द हो गया हो उसे फूल (मासिक धर्म) अवश्य आने लगेगा ॥ ४७

तथाच—

तुम्बी बीजं यवक्षारं गुडा मदनकंफलम् ।
दन्ती सीहुंडदुग्धेन वर्तिका पुष्प कृद्भवेत् ॥ ४८ ॥

कड़वी तोम्बी के बीज, यवक्षार, पुराना गुड, मैंनफल, दन्ती इनका चूर्ण बारीक करलो थोहर के दूध से बत्ती तैयारकर योनि में धरने से फूल आने लगेगा ॥ ४८ ॥

योनि रोगहरावर्तिका ।

जातीफलं विडङ्गञ्च बहुला नागकेसरम् ।
शिरीषांकुराब्धिफेनेन ह्येषा टंक मितावटी ॥ ४९ ॥
समस्त भगदोषाणां नाशिनी भग संस्थिता ।
शालिमुद्गं घृतं दुग्धं पथ्यम त्रविधीयताम् ॥ ५० ॥

जायफल, विडग, इलायची दाना, नागकेसर, शिरीष के कोमल अंकुर, समुद्रझाग इनका सम भाग बारीक चूर्ण करे ४ मासा की बत्ती बनाकर योनि मे स्थापन की हुई सम्पूर्ण भग के विकारों का नाश करती है, इस मे पथ्य भात मूंग की दाल घी दूध का प्रयोग करना चाहिये ॥

नोट्—बत्ती, अधोलिखित विधि से तैयार करे ।

गाय का घी लोहे की कडछी मे रख कर अग्नि पर गरम करो बाद उसमें पुराना गुड मिला लो जब घी के साथ गुड पिघल कर

मिल जाय तब उसमें उपरोक्त औषधियों का चूर्ण मिलाकर किसी लोहे आदि की सींक से एकजान करलो मिल जाने पर फूल की थाली में धरदो शीतल हो जाने पर बत्ती बनालो।

अथ गर्भधारणौषधम्।

त्र्यूषणं कंटकारी च नागकेसर मेवच।

गोघृतेन समंपीतं गर्भ धारण मुत्तमम् ॥ ५१ ॥

पिप्पली, मिरच, शुंठी, कटेरी, नागकेसर इनका चूर्ण गाय के घी से मासिक धर्म के चतुर्थ दिन तीन दिन से सेवन कराने से गर्भस्थिति होती है ॥ ५१ ॥

तथाच—

नागकेसर मेवैकमृत्वन्ते गव्य सर्पिपा।

पीत्वा गर्भमवाप्नोति पथ्यं दुग्धोदनं शुभम् ॥ ५२ ॥

केवल नागकेसर का चूर्ण ही ऋतु स्नान के अनन्तर गाय के घी से सेवन करने से गर्भधारण होता है, तीन दिन सेवन करना चाहिये दूध भात का पथ्य करना ॥ ५२ ॥

अथ सुखप्रसूतिकरौषधम्।

पाठां वङ्गञ्च संपिष्य भगलेपं प्रयोजयेत्।

प्रसूतिर्जायते सद्य उदरे न व्यथा भवेत् ॥ ५३ ॥

पाठा, वङ्गभस्म इनको पीस कर भग में लेप करने से सुख से शीघ्र प्रसव (बच्चा) होता है, और उदरमे पीड़ा भी नहीं होती है ॥ ५३

अथान्यलेपः।

वज्रीदुग्धं समादाय नखान्नाभिश्च लेपयेत्।

प्रसूतिर्जायते वद्धेमूले मुंड्याःकटीतटे ॥ ५४ ॥

---

*बजार मे जो नागकेसर मिलती है वह असली नागकेसर नहीं है (असली नागकेसर पुन्नाग अर्थात् सुरङ्गी की सूखी कली को कहते हैं) इसी से गुण नहीं होता है।

थोहर के दूध का हाथ, पाव, और नाभी मे लेप करने से सुख से प्रसूति होती है।

और मुण्डी (गोरखमुण्डी) का मूल कमर मे बांधने से भी सुख से प्रसव होता है ॥ ५४ ॥

अथ स्रवद्गर्भस्तम्भनौषधम् ॥

लज्जालुधातकी पद्मबीजानि मधुयष्टीका।
तण्डुलोदक संपीतमिदं गर्भं न पातयेत् ॥ ५५ ॥

लज्जावन्ती (छुई मुई) धवैका फूल, × कमल का बीज, मुलहठी इनका चूर्ण कर चावलो के पानी से सेवन किया गर्भ को गिरने नहीं देता ॥ ५५ ॥

अथ भगसङ्कोचनम् ।

स्फटिका धातकी माई माजू पुष्पं फल त्वचम् ।
स्मरमन्दिर मध्यस्थं संकोचकुरुते क्षणात ॥ ५६ ॥

फूल फटकरी, धवई का फूल, मांई, माजू का फूल, फल और छाल इनका चूर्ण कर योनि के बीच मे मर्दन करने से शीघ्र ही भग संकुचित होजाती है ॥ ५६ ॥

तथाच—

कस्तूरी तुल्य कर्पूरवटी क्षौद्रेण संस्कृता।
गाढी करोति योनिस्था यांनिमेषान संशयः ॥ ५७ ॥

कस्तूरी, कपूर दोनो सम भाग लेकर शहद से गोली तैयार करे यह गोली योनि मे धरी हुई निश्चय से अत्यन्त कठिन कर देती है ॥ ५७ ॥

× कमल बीज के अन्दर हरी जीभ विष होती है इसे निकाल डालना चाहिये।

भग दुर्गन्धि हरौषधम् ।

अरिष्टपत्र क्वाथेन धावनं दुष्ट गन्धहृत् ।

भगस्य गव्य तक्रेण धावनात्कठिनक्रिया ॥ ५८ ॥

नीम के पत्ते के क्वाथ से भग धोई जाय तो भग की बदबू नष्ट होती है और गाय के मठा (छाछ) से प्रक्षालन करने पर कठिन होती है ॥ ५८ ॥

अथ कुच कठिनौषधम् ।

वाजीगन्धा देवदारु वचा गजकणा समा ।

शतपुष्पा कर्णकारी नीरेणै तद्धि लेपनात् ॥ ५९ ॥

कुचौ कठिनतां धत्ते पतितावापि योषितः ।

तण्डुलोदकनस्यवा दत्तं पुष्पदिनेषु च ॥ ६० ॥

असगन्ध देवदारु, वच, गज पीपली, सौंफ, कनेर इनको सम-भाग लेकर जल से बारीक पीस स्तनो पर लेप करने से गिरे हुए भी स्त्री के कुच कठिन हो जाते हैं ।

और ऋतु (हैज) के दिनों मे चार दिन तक चावलों के धोवन की नास लेने से भी स्तन कठिन होते है ॥ ६० ॥

अथ स्तन पीड़ा हरौषधम् ।

निशां कुमारी सन्ताप्य कुचौयस्तापयेद्भिषक् ।

कुचपीड़ा रोगनाशः सिद्धयोगोऽयमुच्यते ॥ ६१ ॥

हलदी, का बारीक चूर्ण कर घीकुवार के गूदे पर खूब बुरका कर आग पर गरम कर स्त्री के स्तनो पर सेक सुहाता २ दे इस सिद्ध योग से स्तन पीड़ा का नाश होता है ॥ ६१ ॥

वाजीकरण पुरुषी करणौषधम् ।

विजयाऽर्ककरजटां पिष्ट्वा, कनकजैरसैः ।

छायाशुष्कांवटी कृत्वापुंमूत्रेण विघर्षयेत् ॥ ६२ ॥

लेपनात्कठिनं लिंगं स्थूलं दीर्घश्च जायते ।

सूतारव गन्धेभकणाखताभिर्लेपनादपि ॥ ६३ ॥

भाग, अककराका मूल, धतूरा के रस में घोट कर गोली तैयार करे छाया में सुखालें, आदमी के पिशाब में गोली घिस कर आगे का हिस्सा छोड़ कर लिङ्ग पर लेप करे इससे लिंग कठिन मोटा तथा लम्बा होता है। और पारा, असगंध, गजपीपली, मिश्री का लेप करने से भी उपरोक्त फल होता है ॥ ६३ ॥

अथ स्तम्भनौषधम् ।

अजासीहुंडयोदुंग्धं लज्जालुश्चाश्वमारकः ।
करांघ्रिनाभिलेपोऽयं वीर्यस्तम्भकरः परः ॥ ६४ ॥

बकरी का दूध, थोहर का दूध, छुईमुई, कनेर इनका हाथ और पावों के तलुओं में तथा नाभी में लेप करने से स्त्री सहवास में वीर्य स्तम्भ (बन्धेज) होता है ॥ ६४ ॥

अथ वाजीकरणौषधम् ।

पिकाक्षबीजं मुसली वानरीबीज नागरम् ।
त्रिकण्टकोऽश्वगधा च वलाशाल्मलि पुष्पकम् ॥ ६५ ॥
शतावरी मोचरसः श्लेष्मान्तक फलं तथा ।
चूर्णं सिता दुग्धयुतं पीतं बीयकरं परम् ॥ ६६ ॥

तालमखाना, सफेद मूषली, कौंच के बीज, शुंठी, गोखरू, असगंध, खरेटी, सीमल के फूल, शतावर, मोचरस, लसूड़ी का फल इनका चूर्ण कर मिश्री से मिलें दूध से सेवन किया अत्यन्त वीर्य को बढ़ाता है, अल्पबीर्य, क्षीणवीर्य वालों के लिये हितकर है ॥ ६६ ॥

कामविलास गुटिका ।

जातीफलं कुंकुमञ्च पिकाक्षं हिंगुलं त्वचा ।
लवंगं वानरीबीज पत्रं तुम्बरु मस्तकी ॥ ६७ ॥

यवाम्य ककरा चेति ह्येषां भाग त्रयं स्मृतम् ।
चतुर्थांशोऽहिफेनस्यवटी टक मिता कृता ॥ ६८ ॥
भक्षिता शयने स्त्रीणां सहस्रं रमते नरः ।

जायफल, केशर, तालमखाना, सिंगरफ, (यदि रससिंदूर डाला जाय तो अत्युत्तम है) दालचीनी, लौंग, कौंचबीज, तजपत्र, तेजबल, रूमामस्तंगी, अजवाइन, अकरकरा, इन सब औषधों को तीन २ भाग और अफीम चतुर्थांश सबका बारीक चूर्ण कर ४ मासा की गोली तैयार करके रात में सोते समय दूध से सेवन करे इसके प्रभाव से पुरुष अनेक स्त्रियों से रमन कर सकता है ॥ ६८ ॥

अथ देहदौर्गन्ध्यहरौषधम् ।

चन्दनं रजनी मुस्तं शठीरुद्रजटागुरुः ।
कर्पूरं पद्मकं लोध्रं मूर्वा मातङ्ग केसरम् ॥ ६९ ॥
उशीरामल कान्येषां कल्क मर्दनं तस्तनौ ।
दुष्टगंधः क्षयं याति पित्त दोषश्च नश्यति ॥ ७० ॥

सफेदचन्दन, हल्दी नागरमोथा, कपूर, कचूर, बालछड़, अगर, काफूर, पद्म, लोध, मूर्वा, नागकेशर, खस, आमला इनका बारीक कल्क पानी से करके शरीर में मर्दन करने से शरीर की दुर्गन्धि का नाश होता है और पित्त दोष भी नष्ट होता है ॥ ७० ॥

अथ कक्षा दुर्गन्धहरौषधम् ।

मुस्तामलकबिल्वानि साभयानि विलेपयेत् ।
नीरेण कक्षयोर्द्व यार्दौर्गन्ध्यं हरते क्षणात् ॥ ७१ ॥

नागरमोथा, आमला, बलगिरी, हरड़ सम भाग चूर्ण कर पानी से इनका दोनों बगलो मे लेप करने से बगलो की दुर्गन्धि नाश होती है ॥ ७१ ॥

अथ मुखदुर्गन्धहरौषधम् ।

त्रिजातकं च स्थोणेयं जातीपत्रेण केशरम् ।
जातीफल चेति वटी मधुना सहवासिनी ॥ ७२ ॥
लोध्रं शिरीष पुष्पाणि ह्युशीरं नागकेसरम् ।
जलेन मर्दयेद्वक्त्रं दुर्गन्धि हरणं परम् ॥ ७३ ॥

दालचीनी, इलायची, तजपत्र, थुनेर, जाविर्त्री- नागकेशर, जायफल, इनकी शहद में गोली बनाकर मुख मे धरने से मुखसे बदबू का आना बन्द होता है।

अथवा—लोध, शरीषके फूल, उशीर, नागकेशर, इनकी जलके साथ गोली बनाकर मुखमें रखने से भी मुखकी दुर्गन्ध का नाश होता है ॥ ७३ ॥

॥ इति ॥
श्रीहरिराय शर्म विरचिते हरिधारितग्रंथे
स्त्रीरोग प्रतीकार वाजीकरण प्रतीकारीनाम
षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

उपदंशशूकयोः प्रतीकारः ।

स्निग्धस्विन्नस्य तस्यादौ ध्वज मध्ये शिराव्यधः ॥ ६४ ॥
जलौकापातनं च स्यादूर्ध्वाधः शोधनं तथा ।
पाकोरक्ष्य. प्रयत्नेन शिश्नक्षय करोहि सः ॥ ७५ ॥

उपदंश (गरमी) (आतशक) वाले रोगी को प्रथम स्नेह और स्वेद देकर किसी चतुर डाक्टर आदि से ध्वज (लिंग) के बीचकी नाड़ी से रुधिर निकालवा दे या जोक लगाकर खून निकलवावे, वमन विरेचन से शुद्ध करावे, विशेषकर ये ध्यान रहे कि लिंग पक न जाय पकने से लिंग गिर जाने का भय रहता है ॥ ७५ ॥

उपदंशे कषायः ।

पटोल निम्ब त्रिफला गडूची काथं पिवेद्वा खदिरासनस्य ।
सगुग्गुल वा त्रिवृतायुतंवा सर्वोपदंश प्रहरः प्रयोगः ॥ ७६ ॥

बनपरवल, नीम, हरड़, बहेड़ा, आमला, गिलोय इनका क्वाथ शुद्ध गुग्गुल अथवा निशोत का चूर्ण मिलाकर पिलाने से अथवा खैर का काथ गुग्गल या निशोत मिलाकर पिलाने से सब प्रकार के उपदंश नष्ट होते है ॥ ७७ ॥

व्रणप्रक्षालन विधिः ।

त्रिफलायाः कषायेण भृङ्गराज रसेनवा ।
व्रणप्रक्षालनं कुर्यादुपदंश प्रशान्तये ॥ ७७ ॥

हरड़, बहेड़ा, आमला के काथ से अथवा भांगरा के रस से उपदंश के व्रण (जखम) साफ होते हैं ७७ ॥

बाद आगे लिखे अनुसार लेप करना चाहिये ।

अथ लेपः

दहेत कटाहे त्रिफलां समांशा मधु संयुताम् ।
उपदंशे प्रलेपोऽयंसद्यो रोपयतिव्रणम् ॥ ७८ ॥

हरड़, बहेड़ा, आमला, तीनो के बराबर जल और शहत मिला करकढाही में पकावे जब त्रिफला जलकर कोयला की माफिक हो तो बारीक घोट लेप करने से शीघ्र ही व्रण साफ होकर अंकुर आ जाता है ॥ ७८ ॥

उपदंशे धूपः ॥

टंकणं हरिताल च हिंगुलंचतृतीयकम् ।
टक द्वय द्वयं माह्यं पारदं टंक मेककम् ॥ ७९ ॥
एतेषां सप्तगुटिकाः सप्त कालेषु धूपयेत् ।
सुवातरक्षां कृत्वैतदुपदंशात्प्रमुच्यते ॥ ८० ॥

सुहागा, हरताल, सिंगरफ दो दो टंक, पारा एक टंक इनको बारीक पीसकर ७ गोली करले, ७ दिन तक एक २ गोली की जखमों पर धूप दे वायु की रक्षा करे हवा न लगने पावे इस प्रयोग से उपदंश का रोगी उपदंश से मुक्त होता है ॥ ८० ॥

अथ शूक रोगाधिकारः ।

अक्रमाच्छेफसोवृद्धिं योऽभिवांछतिमूढधीः

व्याधयस्तस्य जायन्ते दशचाष्टौ च शूकजाः ॥ ८१ ॥

जो विषय लम्पट बहुत लिङ्ग वृद्धि चाहते हैं वह अठारह प्रकार की शूक व्याधि से पीड़ित होते हैं ॥ ८१ ॥

अत्र चिकित्सा ।

हितंच सर्पिषः पानं मध्ये चापि विरेचनम् ।

हितः शोणित मोक्षश्च यच्चापि लघु भोजनम् ।

शूक रोग में प्रथम घी पिलाना, मध्य में विरेचन, अन्तमें रुधिर निकलवाना हितकर है और सब हलका भोजनपथ्य है ॥ ८२ ॥

अथ विरेचनौषधम् ।

शुद्धान्गोदुग्ध संपक्वाञ्जय पालानंजसा हरेत् ।

दशटंकान् टंकमितं पुष्करं मरिचं तथा ॥ ८३ ॥

यवानीं नागरं तुत्थं गैरिकं सम मेवच ।

एषां वटीं सप्त गुंजामि तांद्विगुण खण्डकाम् ॥ ८४ ॥

भुक्त्वा विरिच्यते मर्त्यः पथ्यं दध्योदनं मतम् ।

प्रथम शुद्ध किये पुनः गाय के दूध में पकाये हुए जमालगोटे १० टंक (४० तोला) लेवे पोहकर मूल, मरिच, अजवायन, सोंठ, शुद्ध तूतिया, गेरू यह सब एक २ टंक लेकर इनको बारीक पीस ७ रत्ती की गोली तैयार करे इसको भक्षण कर पुरुष विरेक को प्राप्त होता है, इसमें पथ्य दधि भात कहा गया है ॥ ८४ ॥

अथ जयपाल शोधनम्

नविषं विषमित्याहुर्जैपालं विषं मुच्यते ।
शोधितोऽयंविरेकेषु चमत्कारकरः परः ॥
पञ्चगव्येषु सशोध्य दूरी कुर्याच्च जिह्विकाम् ॥ ८६ ॥
ततोम्लवर्गे दशधाक्षारवर्गे त्रिधा पुनः ।
कुमारिका द्रवे चैव जले भस्म नियोजयेत् ॥ ८७ ॥
एवं शुद्धस्तु जयपालो भवेद्दाह विवर्जितः ।
तदाविरेचने दद्यादमृतादधिको गुणः ।
मन्दोदरि तवाख्यात यन्मया शिवतः श्रुतम् ॥ ८८ ॥

जहर को जहर नहीं कहा जाता अशुद्ध जयपाल जहर होता है इस लिये यहां जयपाल शोधन विधि लिखी जाती है—जयपालों का छिलका उतार कर पंचगव्य (गौ का मल, मूत्र, दधि, दूध, घी) में पृथक् २ दोलायन्त्र से पका कर चाकू से जीभी निकाल अलग कर दो पुनः अम्लवर्ग मे १० वार, क्षारवर्ग मे ३ वार, बाद १ वार घी कुमारी के रस में शोध लो इस प्रकार शुद्ध किया जयपाल दाहादि विकार नहीं करता इसका विरेक मे बर्ताव किया अमृत तुल्य के गुण दिखाता है ॥ ८८ ॥

गोवर्द्धनोधारण वृत्त लील गोगोपगोपीक्षितचित्र शीलम् ।
स्वर्वी कृता खंडल गव्य मोह गोमंडला खंडल मानतोहम् ॥
इति श्रीहरिराय शर्म्म विरचिते हरिधारित ग्रन्थे, उपदंश
शुक्रदोष प्रतीकारोरेचनौषध प्रयोग संयुतः
सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥
हरिधारित ग्रन्थः समाप्ति मगात्
शुभमस्तु सव जगताम्

अनुभूत योगमाला नामक
ग्रन्थमाला के नियम



१—हर मास या पुस्तक मिलने पर एक २ पुस्तक प्रकाशित करना।

२—स्थायी ग्राहक वही समझे जावेंगे जो १) प्रवेश फीस भेज ग्राहक श्रेणी मे नाम लिखा लेंगे ऐसे ग्राहको का सब पुस्तकें पौनी कीमत पर दी जावेगी।

३—अब तक अत्यन्त दुर्लभ-राजयक्ष्मा, श्वास, अर्श ये ५० ग्रन्थ निकल चुके हैं अवश्य आज ही मंगवा देखिये।

४—यह एक रुपया सदा जमा रहेगा नवीन पुस्तक प्रेस में आते ही स्थायी ग्राहकों के पास सूचना भेज दी जावेगी सूचना पहुँचते ही मूल्य के टिकट भेज देना चाहिये, मूल्य न आने तक पुस्तक न भेजी जावेगी।

५—जो रोग असाध्य समझे जाते है ऐसे २ कठिन रोगो पर एक-एक निबन्ध निकाल इस कमी को दूर करना ही इस ग्रंथमाला का खास उद्देश्य होगा।

६—पुस्तक प्रकाशन में धन द्वारा सहायता देने वालो का व प्राचीन हस्त लिखित ग्रन्थ छपने के लिये भेजने वालो का सधन्यवाद नाम व फोटो पुस्तक पर छाप दिया जावेगा।

नोट—प्रत्येक आयुर्वेद प्रेमी का कर्तव्य है कि वे स्वयं ग्राहक बने व अपने इष्ट मित्रो को भी बनावें।

अनुभूत योगमाला आफिस,

बरालोकपुर, इटावा यू० पी०